Aoshodah sangrah
by.
Radhakrishen Maharaj

NKP Lucknow 1875

श्री सच्चिदानन्द मूर्त्तये परमात्मने नमः

औषधिसङ्ग्रहकल्पवल्ली

सकल काव्य व्याकरण पुराणाद्यनेक विद्या विनोद रसिक, परोप
कार स्वभाव, अयोध्या निकट वर्ति नौराही ग्रामस्थ, पण्डितरा
ज श्रीराधा कृष्ण महाराज रचित

जिस में

कास, स्वास, प्रमेहादि और वात पित्त कफ कृतानेक रोगों
के निवृत्त्यर्थ अनेक भांति की महा हित कारक औषधि

वर्णित हैं

वही

यथोचित अति प्रबन्ध से शुद्ध होकर

स्थान लखनऊ

मुन्शी नवल किशोर के पाषाण यन्त्रालय में स्वच्छता पूर्वक मुद्रित हुआ

मई सन् १८७५ ई०

श्रीगणेशायनमः॥

अथनाड़ीपरीक्षा

दोहा

भूखे प्यासे सैनयुत तेल लगावै कोय। जे वै न्हावै तुरत ही नाड़ी ज्ञान न होय ॥ हाथ अंगूठा निकट ही नाड़ी जीवनमूल। तानै पंडित जीव को जानै सुख दुख सूल ॥ नर को कर पद दाहिने पतिय को करपद वाम। तहां वैद जन निरखिकै नारी को परमान। आदि अंत अरु मध्य ते वात पित्त कफ जान। क्रमते नाड़ी तीन विधि यह नाड़ी को ज्ञान ॥ सांप जोंक गति सम चलै नाड़ी वात बखान। चपल काग मेंडुक लवा गति तब पित्त बखान ॥ मोर कबूतर पडुकुली राज हंस तमचूर। इन्ह की गति नाड़ी निरखि कफ जानो यह मूर ।+। बार बार मंडूक गति बारबार अहि गौन। बात पित्त को नाड़िका पंडित जानो तौन ॥ सर्प हंस गति सम चलै नाड़ी तब कफ बात। सिंह सिंह गति पित्त कफ भारी तब ए बात ॥ रहि रहि फोरत का ठ्यों कठ फोरा कर सोर। यों नारी जब जानिये सन्निपात कर जोर ॥ तीस बार नारी फरकि फिर नारी रहि जाय। तब यह निश्चय जानिये रोगी नाठ हराय ॥ रहि रहि रहि रहि फिर फिर चलै नाडी बारंबार। तब रोगी के प्राण निज यम के सदन अगार ॥ **षट्पदी** जिमि तिमि नाड़ी चलै लवा व्याल हि गति फिरि फिरि। रहि रहि नाडी चलै जाय सूक्षम कै गिरि गिरि ॥ फरकै कंठ मंझार नित्य नाडी बहु तब हु। चलि चलि अंगुरी छुवै बहुरि नाड़ी बहकै बहु ॥ इहि भांति होइ बहु तौन तहिं नाड़ी को तब निरखि नित। जानो

असाध्यनाड़ी तबहिं सन्निपातबुधजानि निन्त ॥ पहिलेपित्त गतिहोइबात गति होइ बहुरि वह । कफ गति नाड़ी होय भेद कहि दियो बुद्धयह ॥ चक्रचढी सी फिरे थान्हनाड़ी अपनो तजि । बहुतभयातक होय मोर गतिचले बहुरि सजि ॥ होयजायसूक्षम बहुरि जानिपरै नकिये परस । यहभांति होयनाड़ी जबहिं तब असाध्य कहिये निरस ॥ दोहा ॥ नाड़ी फरकै मांसमहिं बहुगम्भीर बखानि । नाड़ीज्वर के जोर ते गुप्त अस्त अनिजानि ॥ चौपाई ॥ काम कोप ते चंचल नाड़ी । चिंता रोग छीन निरधारी ॥ छीन धातु मंदागिन वारो । ताकी नाड़ी मंद बिचारो ॥ दोहा ॥ लोहू आंव बिकार ते गरुईनाड़ी होय । उदर अग्नि अति तब चपल हलकी लक्षण सोय ॥ सोरठा ॥ लक्षणजानो येह भूखे की नाड़ी चपल । मुनिजन करी विवेक अफरे की थिर जानिये ॥ दोहा ॥ डपहन अग्नि समानज्वर मैं लगिरि चंचल नारि । वह जीवै नर एक दिन मुनिजन कहि निरधारि ॥ जैसे डमरू चलत है यों नाड़ी चलिजाय । ताकी नाड़ी एक दिन नीर ठहराय ॥ **अथ जीभ की परीक्षा** दरकी पीरी खरखरी जीभ पवन कहि देत । लाल स्याम वह पित्त ते कफ तें पिच्छिल सेत ॥ सूखी कारी कंटकित सन्निपात कहि दीन । मिलवा लक्षण होइ कै अशुभ सुलक्षण हीन ॥ **अथ नेत्र परीक्षा** रूखे चंचल धूमरे भीमजरत से नैन । निश्चय रपजो जानिये बात रोग तब ऐन ॥ दीप सुहाय न संत तब पीत नषन तब पित्त । गीले चिकने तेज घट मंद जानि कफ मित्त ॥ बात पित्त कफ बात के कै पुनि कफै मिलंत । मिलवा लक्षण होइ कै नयन बरन लखि संत ॥ कोरे टेढ़े मोरु अति तंडायुत पुनि देखि । लाल भयानक नयन लखि कही त्रिदोष विशेखि ॥ आंखि भयानक एक जब औ दूजी मुंदि जाय । सो रोगी दिन तीन मों यम के घर ठहराय ॥ जो रोगी के तुरतही लोचन जोति विहीन । अरु कछु कारे होय तौ जमसेवक कहि दीन ॥ चौपाई ॥ जाकी मुखद्युति घनसमकारी । लाल किहोय रक्त अनुहारी ॥ चितवन लगै भयानक भारी

तारोगी की मृत्यु बिचारी ॥ दोहा ॥ भ्रमनेत्र गतारे लगे एकहरि हिंचेत। एक रात महँ जमनगर मग रोगी गहि लेत ॥ **अथ असाध्य व्याधि विधि । छप्पै ।** नींद नाश निशि रहै कंठ जब कफ भरि आवै। होय देह मधि दाह चैन पल एक न पावै ॥ बात कहत तनु नरान होय लघु सुक्षम नारी। इन्द्री सीवन दहन शक्ति नहिं जाइ बिचारी ॥ होइ जाय रोगी सुइ मितुरत राग आधीन जब। ताकहँ बिचारि औषधि करहु राम नाम तज काम सब ॥ **अथ ज्वराधिक बात ज्वर** कंप बेग कंठ मुख ओंठ सूखे निद्रा नाश छींक नहिं आवै और देह रूखा धाइयो। अंग हिय मुख पीर बदन बिरस होइ गाढ़ी ढोढ़ी बात बेदन भरु निश्चंत जानियो ॥ बदन कसैला इ अंग फुरिया करन नाद उरस्त दबिष लेप होइ उरजान को। आलस अंतरोम हर्ष सूखा कास बमन जौं होइ बात ज्वर दर्मि तान को ॥ दोहा ॥ बीट मूत कैसना अरुन प्यास प्रलाप जम्हाइ। सूल अफर बो बात ज्वर लक्षण महँ निज आइ ॥ **अथ पित्तज्वर लक्षणं** चौपाई ॥ तीक्षन बेग जोर अतिसार। अलप नींद उकलेद अपार ॥ कंठ ओर मुख नाक बखानो। तिन कोपक बो यह मन आनो ॥ सेद प्रलाप बदन कटुताई। दाह मूर्छा तृषा बढ़ाई ॥ भ्रम मद पीत नयन मल आरी। पित्तज्वर को लक्षण बादी ॥ अथ **कफ ज्वर लक्षण** चौपाई ॥ निश्चल अंग बेग पतुराई। मधुर बदन आलस ठहराई ॥ अरु मल मूत्र स्वेत रंग होई। तम त्रिपित जानहु ये दोई ॥ गरु ताशी न और उकलेद। रोम हर्ष निद्रा अरु भेद ॥ फुरिया अंग सीस परसेक। खजुरी तंद्रा छर्दि बिशेक ॥ ताती बस्तु बहुत मन मानौ। मंद पेट की अग्नि बखानौ ॥ पीनस अरु बर्धेत दृग कास। कफ ज्वर को एकरो प्रकास ॥ अथ **बात पित्त ज्वर** नींद न आवै मूड़ पिराई। भ्रम मद कंठ शोथ अधिकाई ॥ रोम हर्ष बमि अरुचि बताई। गांठ गांठ उपजै अति पीर। मानो लगैं बिस कारे तीर ॥ मौन होय अरु होइ जम्हाई। बात पित्त ज्वर रीति बताई **अथ बात कफ ज्वर** निश्चल अंग नींद अति आवै। गांठ गांठ अति पीर बतावै ॥ पीनस होइ होइ अरु गास। मूड पिराय पसीना नास ॥ बेग होइ मध्यम जे हिजोर। देह माऊ संताप कठोर ॥ ऐसे लक्षण जनु अनुमानो। बात कफ ज्वर माहि बखानो ॥ **अथ पित्त कफ ज्वर** ॥ चौपाई ॥ लिबिर लिबिर मुख कटु बो होई। निद्रा मोह मगद अ-

तिदोय ॥ कास अरुच अरु लागै प्यास। फिर फिर होय दाह परगास॥ अरु फिर फिर जाड़ो लगि आवै। रोगी पल भर चैन न पावै॥ अगर होइ लक्षण जस पेखे। पित्त कफ ज्वर वैद्य बतै है॥ अथ सन्निपात लक्षणम्। छिन मो जाड़ो छिन मो दाह। मूड़ पीर नहि होइ निवाह॥ संधि संधि हाड़न मों पीर। नैन नि में भरि आवत नीर। टेढे पलक नयन अति लाल। भरि राखे हैं मनो गुलाल॥ करननाद अरु कान पिराई। कंठ कंठ होइ कंठ भरि आई॥ तद्रा मोह प्रलाप प्रकास। स्वास अरुचि अति उपजै कास॥ जीभ खरखरी जरे समान। सिथिल अंग सब होइ निदान॥ कफ लोहू उगिलै मुख पित्त। धुनै सीस दुख पावै चित्त॥ आवै अलप पसीना अंग। थोरो नींद मूत्र मल संग॥ देह दूबरी अधिक न आइ। घन सम कंठ घनो घहराइ॥ देह ददोरा कारे लाल। मंडल होइ के बड़े विशाल॥ पकै कान मुख बोल न आवै। अधिक उदर मधि बोझ बढ़ावै॥ जाड़ो लगै सबै दिन सोवै। अरु जागत सगरी निशि खोवै॥ रैन दिना के जागत जाई। बहुत पसीना कै नहिं आई॥ हंसि हंसि नाचै गावै गीत। लीला निरखि होइ मन भीत॥ बहुते दिना रोग पचि जाय। सन्निपात के लक्षण आय॥ दोहा॥ ज्वर में लंघन प्रथम ही मुनि जन दई बताय। कास सोक भय सोक ते वात ज्वर पचि जाय॥ चौपाई॥ वात ज्वर अरु ज्वर वारो। भूखो होय सो बहुत विचारो॥ नारि गुर्विनी बालक प्यासो। बूढ़ो अरु डरियो कारवासो॥ अरु दुर्बल इन कवि गुनताई। उर बात होइ पुनि जाई॥ इत मों रोगी बुध जन लेइ। लंघन करै न इनको देइ॥ दोहा॥ लंघन मानुष करत है दोष सहित बहि आहि। दोष गये फिर कैसहू लंघन करि न जाय॥ सोरठा॥ सप्त दिवस लै वाइ दसवासर कहि पित्त को। कफ द्वादस दिन आय युवा फेरि औरन कहो॥ जानि होइ ज्वर परख क्रम न॥ दोहा॥ प्यास भयानक बहुत है प्यास हरत है प्रान। प्यासे को जल दीजिये यही बात परमान॥ मोह प्यास ते होत है मो हलत है प्रान। नातें पऊि न

कवन विधि वरजैं जल को पान ॥चौपाई॥ नयन रोग ज्वर मंडल भंग। उदर रोग को लखौ प्रसंग ॥ मंदागिनि अरु अरुच विचारौ। मुख जरिबो पीनस निरधारो ॥ अरु ज्वर सोथ रोग फिर ऐसो। फारा अरु मधुमाहुर तैसो ॥ इतनो रोग जाहि लखि पावौ ताहि कुनकुनो नीर पियावौ ॥ छप्पै ॥ मूर्छा दाह महागरमी अरु पित्त घनो जेहि ते दुख पावै। राह चलै अति होय परिश्रम चोट लगै कछु जासु न भावै ॥ पित के रक्त के दाह को जोर औ खाये ते माहुर जोर जनावै। होत है रोग इतो नर जाहि को ताहि को सीतल नीर पियावै ॥ चौपाई ॥ पीनस अरु नूतन ज्वर जानो। और गलस हरो तब खानो ॥ पीर पसुरिआ की करि देउ। संग्रहणी पुनि मन धर लेउ ॥ आधमान अरु अरुचि बनावै। पित्त व्यथा अरु कफ मन लावै ॥ गुल्म विरोध काश अरु स्वास। विद्रधि रोग जो होय प्रकास ॥ बारबार हिक्का जो होइ। स्नेह पान न करै जु कोइ ॥ इतनो रोग जाहि लखि पावै। ताको ताता नीर पियावै ॥ इति ॥ जल औटै आधा बाकी रहै तीनि हो सा बाल्यो भर है भेद ते सरद में; हेमंत में; ग्रीषम सिसिर बसंत में; ॥ वर्षा में ॥।= जरावै बाकी रहै सो गुनदायक उष्णोदक है सो उस्नोदक है ॥ दोहा ॥ स्वास कास ज्वर मेद कफ बात अरुचि मिटि जाइ। साधै बस्तु करै अगिनि उष्णोदक गुन आइ ॥ चौपाई ॥ चरन हीन जल बात बुझावै। आधो हीन पित्त बिचलावै ॥ कफ हर हीन अंश जब हीन। लघु पाचन दीपन कहि दीन ॥ **सन्निपात ज्वर** जुगल ज्वर में हित है ज्वरादौ लंघनं कुर्य्यात पाचनं मध्य में हितं अंते विरेचनं कुर्य्यादिति सर्वत्र निश्चयः ॥ **पाचन काढ़ा** सोंठ धनिया देवदारु भटकैटैया जर बनभाटा जर जरआबै वैदत बरेड़ बिजौरा की जड़ पिपरामूर मोथा सोंठि कचूर जवाखार क्वाथ कै कफ ज्वर हित है पितपापरा कटाइ जर कचूर दनि चिराइता कुटकी रूसा जड़ क्वाथ करि चीनी डारि पीवै-

पित्तज्वर जाय अन्य परवर पत्र कै काथ करि अष्टांश शेष रहै तब मधु डारि पिवावै दाह पित्तज्वर में परवर पत्र नीम के छाल दाख अमिलतास त्रिफला रुसजर क्वाथ अन्तरिक्षा में हित है अन्य त्रिफला पीपर इन्द्रजव मोथा नींव छाल दाख काथ करि मधुयुक्त पीवै एकतरा जाय हरे जवासो इन्द्रजव परवरा गुरुचि नींव छाल काथ करि पीवै तिजारी जाय सोंठि धनियां मोथा गुरुचि चन्दन रक्त खस काथ कै मधु खांड युक्त पीवै तो तिजारी जाय सही- मोथा भटकटैया की जड़ सोंठि अंवरा गुरुचि पीपर क्वाथ करि मधुयुक्त पीवै विषमज्वर न रहै अन्य जीरा २५ गुड़ पुराना २५ मिश्रित कर खाय वात दाह विषम ज्वर नाशै हरैं चूर्ण करि मधु संग चाटै विषमज्वर नाशै॥ पीपर ५ दूध संग खाय नित्य बढ़ावै ५ जव १०० होय तब घटावै क्रम तै ५ कास स्वास रुधिर विकार पांडु ववासीर सोथ उदर गुल्म विषमज्वर हरन वर्धमान पि[illegible] ली है पथ्य दूध भात खाय अन्य परहेज भंगरा की जड़ डोर से कान में बांधै तो रात्रि का ज्वर हरै स्वेत कनेर की जड़ कर में बांधै जूड़ी जाय सहदेई की जड मगन होके ला कान मे बांधै चौथिया जाय कौआठ्ठी पत्र कै रस अंजन करै तो चौथिआ जाय पिपरामूल हरैं कुटकी मोथा काथ कै पीवै ज्वर सब मिटै कूट सोंठि असगंध सरसों समलै चूर्ण कै धूप करै तो वातपित्त ज्वर नाशै पुहकर मूल कायफर काकरा शृंगी पिपरी चूर्ण कै मधु संग चाटै तो कास स्वास ज्वर कफ नाशै मेथी मैनफल और पीस लेपै तो हाथ पांव की जरन जाय जिह की देही में दाह होय तो उत्तान पारि नादी पर कांस पात्र धरि सीतल जल को [illegible] धार से दाह दूर होय नीव पत्र बेरि पत्र पीसु पानी से मथै फेना काढि लेप करै अंग दाह जाय॥ अथ तेल॥ हरदी लाख मजीठ को कल्क करै बुध बीर लेइ तेल ते षटगुनो व हुरि दही को नीर॥ क्वाथ कल्क वा तेल

मेंडौ वैद पचाइ तेल लगावै अंगमेदाह सीतज्वर जाय लाख जेठी मधु हरदी इंदोरन की जड़ मजीठ वनभांटा सेंधो कूट सतावरी जटामासी रामनि तेल दधि को तोर ६६ औषधि सम भाग लैकल्क करि तेल मे पचावै तव सिद्ध होय सर्वज्वर नासक तेल दोहा ॥ द्वै हरदी त्रिफला वहुरि कुटकी मोथा लेइ । नीमछाल सपटोलदल जलपकटाई लेइ ॥ इनको विधि से क्वाथ करि दीजे तुरत पिआय होय अचेत सचेत सो सन्निपात ज्वर जाय ॥ धनियां गुर्च पदमाख र त चंदन नीव की छाल सव से काढा के पीवै सर्व ज्वर मिटै । अन्य। पुहकरमूल भटकटैया काकरा श्रृंगी त्रिकुट। मगरैल जवासा सम भाग लै चूर्ण कै मधु संग चाटै तो हुचकी कास स्वास कफ कंठरोध मिटै सन्निपात को अवस्य गुर्च मोथा सोंठ त्रिफला चूर्ण कै अदरक के रस से चाटै कफ दूर होय ॥ अन्य ॥ वचा चिरायता कायफर कुटकी मगरैल सव मैदा करि धूरा करै त्रिदोषज्वर जाय ॥ दोहा ॥ सोंठ मिर्च पीपर हरद लोध सुपुहकरमूर । फूटकलौंजी इंद्रजव कुटकी और कचूर ॥ इनमधि डारि चिरायता ढून करै क नाइ । सन्निपातज्वर हरन को भलो अधूरो आइ ॥ अर्थी पीस भुजाय के करै अधूरो अंग । सन्निपातज्वर हरन की भुरे पसीनो अंग सोंठ कलौंजी कायफर कुटथी ए सव आनि । करनमूल का कुन्कुनो औषध कहो वखानि ॥ कर्णक सन्निपाते इति ॥ अथ ज्वर उपद्रव दस स्वास मूर्छा अरुचि अरु छर्दि तृषा अतिसार । मलवंध हुचकी कास अव हु अंग पीर विस्तार ॥ इति ॥ त्रिकुटु मोथा कचूर गदह पूर्णा पुहकरमूल पंचमूली कटाई गुर्च क्वाथ कै पीवै स्वास उपद्रव जाय ॥ अमिलतास वड़ी दारव कटुकी हरैं उसीर पितपापरा क्वाथ कै पीवै मूर्छा मिटै ॥ सोंठ मिर्च क्वाथ कै जल मुख में राखै अरुचि जाय ॥ कागदी नींवू का रस चाटै तथा विजौरा का रस कै धरि सेंधो मधु युक्त मुख में धरै अरुचि जाय ॥ नैरि विजौरा चूक अरु दाडिम रस जंभीर । जीभ लेपन ते वह हरै तुरत तृषा गंभीर ॥ तजपत्रज अरु लाइची चंदन दाख उसीर चूरण मिश्री सहत युत यह चाटै वुधवीर ॥ ऐसो तृषा त्रिदोष

को और पित्त कीजाय । दाह मिटावै जर हरै यह याको गुन आय ॥ चि
राइता पित्तपापरा गुर्च मोथा पाढ़ि सोंठ इन्द्रजव कुटकी क्वाथ
कै पीवै ज्वरातीसार नीक होय सेंधो पानी में घसि लाखु देइ
दुचकी मिटै पीपर पिपरामूर सोंठ इन्द्रजव चूर्ण कै मधु से चाटै
कास मिटै हसकै स्वरस मधु से चाटै तो कास जाय इति अथ अ-
तीसार अग्नि घटावै उदर को जब बाढै जल घात । होंहि पवन आ
धीन मल सहित तरै वहि जात १ अवन लगै मल जल सरिस जबै बार
हीं बार । अतीसार तेहि जानिये छहु विधि वहै प्रकार २ वात पित्त कफ सो
क अरु आंव त्रिदोष जो वोर । या विधि सबये जानिये अतीसार छह ठौर
२ धनिया सोंठ मोथा वेल खस क्वाथ कै पीवै आंम मूल मल बंध
ग्रहनी हरै पाचन दीपन है धान्यपंचक सोंठ क्वाथ कै पीवै पित्ता
तीसार जाय - मोथा वेल खस धनिया सोंठ अतीस क्वाथ कै पीवै
विबंध नीक होय आमसूल ज्वर रक्त रहित अतीसार नीक होय -
चील चूर्ण कै मधु कै साथ चाटै तो रक्त पित्तातीसार नीक होय - सोंठ
रेंड के स्वरस ते पीसै पुट पाक कै मधु से खाय तो शूल अतीसार अरुच
नाशै अथ ग्रहनी चौपाई ॥ अतीसार जब हीं मिट जाई । मंदा
ग्निनि नर गरुवो खाई ॥ ता ते उदर अग्नि अति सूखै । उदर अग्नि अग
हणी दूखै ॥ ग्रहनी दुष्ट न अन्न पचावै । जो कछु खाय अपक्क गिरावै
पचै करै पीड़ा दुर्गंध । फिर फिरि द्रव अरु फिरि फिरि बंध ॥ दोहा ॥
संग्रहणी को यह कहौं लक्षण विरचि विचार । इमि संग्रहणी जानि
ये तब कीजे उपचार ॥ सोंठ वेल पीपर स्याम सधना अरु सेंधो लोन
मिलाउ । वा संग्रहनी बंध को काढो करि के प्याउ ॥ सर्वौषध ते श्रे
ष्ट गौ का माठा है संग्रहनी नाशक ॥ अन्य ॥ लौंग हरे कमलगट्टा
इलाइची छोटी सम लै चूर्ण कै मधु संग खाय तो संग्रहणी मिटै
अथ ववासीर वात पित्त कफ सहज ते लोहू अस त्रै दोष । छः
प्रकार गुद प्रगट है होत अरस को दोष ॥ दोष दुःख बहु भांति की
मेद कास अरु ख्याल । गुद मधि अंकुर मास के करै अरस बेहाल

मिर्च १ सोंठ २ चीत ४ सूरन ८ चूर्ण कै गुड़ सम लै गोली बांधै खाय तो मंदाग्नि गुल्म प्लीह बवासीर नाशक गुटिका प्रसिद्ध है ॥ अन्य ॥ इलाइची २५ तज १ पत्रज ३ नागकेसर ४ मिर्च ५ पीपर ६ सोंठ ७ क्रमवृद्धि सब औषध के सम मिश्री ले चूर्ण कै खाय तो बवासीर अरुचि गुल्म मंदाग्नि नाशै सत्य कैनैनूं तिल खाइकोसू रननेनू खाउ । खायदही शकर मठा करै अरकसको माउ ॥ पीपर चूर्ण कै गौ के मठा में पीवै तो बवासीर जाय ॥ दोहा ॥ सोव हल्दी जोग ते ज्यों परमेह बिलाय । सज्जी चित्रक जोग ते त्यों गुद अंकुर जाय अथ मसूरिका रोग ॥ दोहा ॥ फुरिया सगरी देह में यह मसूरिका जान । अंगभंग कंडू करति भ्रमज्वर पहिल बखान ॥ बेल बेंत बांस कै नासी क्वाथ कै पीवै मसूरिका जाय ॥ दो॰ सीतल जल अमली हरद पीवै पहिले जानि । ताकै तन में सीतला कढै न पहले गानि ॥ अथ अजीर्ण सहज वात पित कफ अरुचि औ सांस इमि पांच । विषमासन सो हो इ यह कहै अजीरन सांच ॥ गंधक ३ सेंधो २ सोंठ १ नीव के रस में मरदन कै टंक सवा भरि प्रातः खाय तो अजीरन जाय भूष लगै ॥ अन्य ॥ हरैं पीपर सोंचरलोन चूर्ण कै छाछ में की ताते पानी में खाय तो अजीर्ण अरुच मंदाग्नि अध्मान वात सूल नाशै सही- चीत सेंधो हरै पीपर गरम पानी से पीस के पीवै तो मांस घृत अन्न अजीर्ण नाशै ॥ अन्य ॥ पक्के जंभीरी नींबू के रस पीपर मिर्च सोंठ राई सेंधो लौंग सबघ दस टंक लेइ सांवर लोन टंक ४ हींग टंक ३ भूनिकै सब औषध चूर्ण कै रस सीसा में भरि कै चूर्ण डारि मुख बंद करि भूमि में गाड़ै दिन २१ बाद लेइ जल से धरै खाय मात्रा १२ तो अजीर्ण सूल विथा मिटै भूख बहुत बढ़ै ॥ इति जंभीरी संधान ॥ अथ विसूचिका दोहा ॥ सुचसमये वेदनि करै भाय अजीरन वात । वैद विचित्र बिसूचिका ताही को कहि जात ॥ नरऊपर निकसै नहीं अन्न वात कफ दुष्ट । तासो कठिन बिलंबिका कहत वैद गुण पुष्ट ॥ चूक कूट सेंधव कल्क करि तैल में

पचावै सो तेल लेप करै तो मल वृद्ध सूल विसूचिका मिटै ॥ अन्य ॥ बच अतीस भंगरा हरे हींग इन्द्रजव आनि । सो चरलोन मिलाइ कै चूरन करिये छानि ॥ चूरन तिसके नीर सों घोरि जवै यह खाय । सूल विसूचिक अरुचि अरु तुरत अजीरन जाय ॥ अथ क्रुम दोहा ॥ हृदय रोग जर कास भ्रम वात वेग अतिसार । केचुआ उपजै उदर महं यह लक्षण निरधार ॥ खुरसानी अजवाइन वासी जल में पीस पीवै तो पेट के कृमि गिरै ॥ अन्य ॥ अजवाइन गुड खाय तो क्रुम गिरैं ॥ अन्य ॥ पलास बीज मधु संग खाय तो क्रुम गिरै ॥ अन्य ॥ वायभिरंग चूर्ण मधु संग खाय तो क्रुम गिरै सत्य ॥ अथ पिंड रोग दोहा । स्वास कास पीरे नयन पीरे नख्खन तन खाल । वमन सोथ धीरि अगिन पांडु रोग को ख्याल ॥ क्वाथ पिये दस मूल को सोंठ कपर छनि डारि । अती सार जर सोथ कफ पांडु रोग विनिवारि ॥ कै त्रिफला कै नीम रस कै गिलोइ मधु मेलि । दाह हरै मधु प्रातही खाय कमल दे ठेलि ॥ अथ रक्त पित्त तीक्षण कटु खासे अमिलरस जारत है पित्त । पित्त जरावत रुधिर को यह सुनु मेरे मित्त ॥ गुद मुख नासा श्रवन ते लोहू वारहि वार । निकसै तासो कहत हैं रक्तपित्त निरधार ॥ रुस के स्वरस मधु समभाग लै खाय तो रक्तपित्त जाय ॥ चाउर के जल सहत मिश्री पीवै प्रात तें रक्तपित्त जाय ॥ अथ कास प्राण वास ऊपर जवै मिलै उदा न सो जाय । कंठ नाभ खेंचन हृदय तवै कास अधिकाय ॥ मोथा रोहित कायफर हरर भरंगी ल्याव । काकराश्रृंगी सोंफ वच देवदारु मिलाव ॥ धना पीपरा डारि कै करि काढो हित जान । पीर वात कफ कास को हींग महत सों सान ॥ कंठ रोध मुख रोग अरु सूल रोग अधिकाय । हिक्का ज्वर औ स्वास कै मान प्रभंजन आय ॥ अथ स्वास अइ कास जव वढत है तव उपजत है स्वास । हुच की एही हेतु सो ता मधिया को वास

दसमूल पुहकरमूल लै क्वाथ कर पीवै तो स्वास कास पसुरी विथा सूल नासै अथ हिक्का सप्त वंध अरु सीतलो अरुजो रूखो खाय सिरो पानि धरि सूत्तिवो धुवां घाम वह खाय ॥ सुनो बोझ लेवो बहुत राह दौर वो और। स्वांस कास हुचकीन के एऊ जने हैं ठौर ॥ मधु सौंचरा बिजौरा रस संग खाय तो हुचकी जाय ॥ अन्य ॥ सोंठ पीपर अंवरा मधु संग खाय तो हुचकी जाय ॥ अन्य ॥ सोंठ भारंगी गरम जल में पीस पीवै तो हुचकी जाय ॥ जो डकार बहुत आवै तो सनाय के वीज सरफोका की पत्ती ६ मिलाय के हुक्का लेइ तो डकार बन्द होय अथ छर्द्दि अति कफ अति संभोग ते दूजा दुर्वल गात। स्वास कास पीडित महा लोहू उगिलत जात ॥ मंदागिनि अरु ज्वर तृषा मांस हानि सित नयन ॥ हुचकी की औषधि विडकु आरि के रस सोंठ मिलै कै खाय तो हुचकी जाय बेरामी में बहुत हुचकी आवै तो असाध्य है ॥ छर्दि ॥ विरस बचन रुइ रोग इमि तौन ॥ औषधि ॥ खांड सहत नैनू मिलै चाटै नित्य तो रुइ रोग जाय असगंध गुरधुरा चूरन कै सहत दूध संग पीवै स्वास कास रुइ जाइ अथ अरुचि जीभ दोष हिय दोष अरु मन संताप तृतीय। सन्निपात अरु दोष ते अरुचि रोग कहि देय ॥ औषधि ॥ मिर्च इलाइची अरु अमिली को रस संग खाय तो अरुचि जाय ॥ अथ तृषा बारबार पानी पियै तृप्त न एकहु होय। फिर फिर चाहै सलिल को तृस्ना कहिये सोय ॥ मिश्री लाइ दाख मधु खजूर इन का पानी पीवै तो तृस्ना जाय ॥ अथ छर्द्दि वात पित्त कफ अरु बहु ज्वर दोष बल खाय। लटी वस्तु देखै नडी छर्द पंच विधि आय ॥ कंजा की फुनगी लोन खटाई संग चटनी करि चाटै भात तो छर्दि जाय ॥ अथ मूर्छा जान परै दुख सुख नहीं गिरै काठ सम देह। ताको कहियत मूर्छा इहै जानि संदेह ॥ पीपरि चूर्ण करि मधु संग चाटै मूर्छा मिटै ॥ मिर्च अदरक के रस में घसि नास दे तो मूर्छा मिटै अथ दाह दोहा ॥ पित्त रक्त सो

मूर्छा तपन ऊरू गरु दाह। त्वचामांक यह कहत हैं ताहि
पित्त समहार ॥ बांस छाल के क्वाथ कै सीत होय मधुडारि।
पीवैं तो विन रक्त होय दाह दूर होय अथोन्माद दोष जाम
रंगजाय कै मत्त करत मन मोहि। व्याधि इहै उन्माद इमि
नाम बतायो तोहि ॥ अथ अपस्मार चौपाई ॥ मोह मग-
न मन निस दिन रहै। भूल जाय जो बातैं कहै ॥ दोष कोप की
बढ़ती कहि। अपस्मार की लीला य है ॥ औषध ॥ पुष्य
नक्षत्र में सुगा कै पित लावै तासो अंजन करै तो अपस्मार मिटै
॥ अन्य ॥ कुक्कुर कै पित्त घृत संग धूनी देइ तो अपस्मार नाशै
॥ अन्य ॥ बच चूर्ण कै मधु संग प्रातः खाय तो अपस्मार जा
य पथ दूध भात जवासा जल में पीसि के पीवै दिन ३ तो अप-
स्मार जाय ॥ अथ वातव्याधि हाथ पांव अपनो कुपित वात
गहै जब अंग। तब वाही में होत है अधीवात परनंग ॥ अथ
वातरक्त दोहा ॥ पवन रुधिर असवार को इमि करि जानि स
रिए। अंग छुवत जानै नहीं तन उपजावत कष्ट ॥ मंडल होरवि
सूचिका विकल अंगुरिया और। वात रक्त लक्षण विकट वैद क
है तेहि ठौर ॥ वात पित्त जब अंग में रहै बहुत दिन छाय। तब य
ह नर की देह में रक्त काढि उपजाय ॥ औषध ॥ दारुहरदी बच
गुर्च कुटकी त्रिफला नींव मंजीठ सम लै काथ कौ पीवैं तो वा
त रक्त कढ़ि नाशै ॥ अन्य ॥ पान चमेली पत्र धतूर पत्र इन
कै रस मुरेठी कूट मैनसिल पारा सम लै खरल करै तेल मय
दरा अंग में लेप करै तो खाजु दाद कुष्ठ विसर्प देह की स्यामता
वात रक्त से हुआ सब रोग नासै ॥ अवस्थितदम ॥ अथ आम
वात अधिक पवन परतेजब हि आम कफ बढ़ जाय ॥ बहु भा
री सो आय यह आम वात घह आय ॥ जानु नाघ कटि उरू
मधि सूल होय अति जोर। आमवात वेदन कहौ यह वेदन सु
कु ठौर ॥ औषधि ॥ सम्हालि सोंठ रेंड की जड़ देवदारु सब गुड़

में निश्चित कै खाय तो आम वात नाशै अथ शूल वात पित्त क फ पित्त कफ वात पित्त कफ वात। आम वात त्रै दोष को शूल आठ है जान अथ परमान शूल अन्न पचै जब होय तब शूल दुख को धाम। करै बन्द मल मूत्र को यह है शूल परिनाम॥ औषधि कंजा सोंचर सोंठ हींग लै गरम पानी से पियै तो वात शूल जाय औषधि हींग सोंठ सोंचर काथ कै पीवै कफ वात कै शूल विशूचिका जाय अन्य भूसी धान की जल सिक्त और तिल पीस एकत्र पोटरी करि अग्नि में सेंकि पेट सेंकै वार वार तो पेट शूल मिटै अथ गुल्म हृदय नाभि के बीच जो पलना गांठि जो होय। रुधिर दोष ते पंचविधि गुल्म कहावे सोय॥ औषधि त्रिरिच हरैं वायभिंग सोंठ ५ हींग १ पीपर ८ चीत जवाइन ७ सब चूर्ण कै गरम जल और मधु संग खाय तो गुल्म रोग स्वास कास संग्रहनी मिटै अथ मूत्र कृच्छ वात पित्त त्रिदोष कफ शक वेग अभिघात शुक्र रोध अपस्मारी मूत्र कृच्छ कहि जान तनिक तनिक वरि आइ कै मूतै वार वार निकसै पीड़ा सहित वह मूत्र कृच्छ निरधार औषधि जवाखार गुरुच काथ कै पीवै तो मूत्र कृच्छ जाय अन्य जवाखार मिश्री सम लै खाय तो मूत्र कृच्छ नाशै. अन्य दूध गरम करकै गुड़ डारि कै खाय तो मूत्र कृच्छ अपस्मारी वात दूर होय अथ अपस्मारी राह रोकि कै मूत्र की करि अरु वस्ति मझार करै वेदन अपस्मारी यह जानो निरधार औषधि पाखानभेद शिलाजीत खांड़ काथ कै खाड डारि पीवै तो पित्त अपस्मारी जाय धानतुसाइकनीर सों घोरि हरद गुड़ खाइ विकट अपस्मारि सिंग की तुरत विदा होयजाइ अथ प्रमेह ये उपजे कफ पित्त ते दश कफ तें ते साध्य चार वात ते होत है ते परमेह असाध्य त्रिफला चूर्ण करि मधु संग खाय तो जीर्ण प्रमेह मिटै सेमर छाल को रस और हरद और मधु संग खाय तो

प्रमेह सब मिटै **अथ मेद** दिन सोवै न चलै फिरै मधुर अन्न रस खाय । अरु कफ पित्त विकार ते मेद रोग अधिकाय ॥ उदर पार कुच अधि बढ़ै मास बहुत यह मेद । बल उत्साह घटै बहुत ताहि कहत हैं मेद ॥ वासी पानी मधु सम लै पियै तो मेद मिटै अन्य सतुआ दही को तोर में घोरि पियै तो मेद मिटै बेल पत्र को रस वस्त्र ते छानि पियै तो मेद रोग जाय **अथ सोथ** बात बाहिरी नसन में लाय रक्त कफ पित्त । दोष सु विष अरु चोट ते करत सोथ को मित्त ॥ गुड़ पीपर सोंठ चूर्ण कै खाय तो अजीर्ण पित्त सूल सोथ मिटै **अथ अंड वृद्धि** बात पित्त कफ मेद अरु मूत्र रुधिर बढ़ि आंत । अंड वृद्धि को सात विधि पवन करत कहि जात ॥ चंदन मोथा पद्माष नीम कमल जड़ दूध सो पीस लेपै तो अंड वृद्धि जाय कुश्र वारी षरी नइ कै पपरी खयर कै उठा कै पती मदार कै कली हाथी कै खूंट तेल कडु महुम कै लेप करै तो असाध्यो कुंड मिटै **अथ विद्र रोग** उर संधी मधि दोष सो जबही सोथ कछु होत । विद्र नाम तो सोथ को कहो मुनीश्वर देत ॥ पीपर हरै सेंधो पीसि बदी कै रस कै तेल में पचै लेपै तो विद्र विया मिटै **कुष्ट लेप:** सरसों सना हरद हरैं बकुची सेंधव वावभिरंग गोमूत्र सों पीसि लेप करै तो कुष्ट मंडल जाय **गजचर्म** हरदी मदार कै पत्र कै रस काढ़ि तेल में पचावै लेप करै गज चर्म जाय **सेहुंवां** की औषधि सोंठ पीपर मिर्च पवांर के वीज मूरी के वीज माठा में पीसि लेप करै तो सेहुंआ दाद नाशै ॥ इति ॥ कूट रेंड की जड़ मट्ठा से पीसि लेप करै सिर व्यथा जाय अन्य केसर घृत सों भूनि मिश्री सम लै दूध सों घोरि कै नास दे तो मूड़ विथा मिटै **आधासीसी मिटै** अथ नेत्ररोग-बात पित्त कफ रुधिर सों बहै नयन सें नीर । नयन रोग वह कहत है अवलकरत है पीर ॥ नीम पत्र चाचमेली के पत्र पीसि दन में भूनै कुन

कुन रहै तो आंख में बांधै पीड़ा जाय अथ नेत्र चिकित्सा घिया रसवत मासे ८ मिश्री मासे ९ नीला थोथा मासे १ अफीम रत्ती ६ मिश्री और रसवत पीतर के कटोरे में पानी ;= दैकै औटै सीरा सम होय तब उतारि कै नीला थोथा अफीम बूकि कै छोड़ दे वस्त्र से छानि थरै से आंखी में देइ तो पीड़ा और तिमिर धुंध मिटै निर्मल होय इतिश्री अजय सार के दूध सों बसै काय फर नयन फूली मिटै छोटी बडी अरु पावै जिय चैन अथ कर्ण रोग दुष्ट पवन कफ सहित करि कान मैल करि पोष पंक आवै अरु बधिरता शूल करत है दोष ॥ मदार के पीपर पान लै तामें घृत चुपरि कै निर्धूम अगिन में सेंकै जब कुम्हिलाय तब रस निकार कै कान में डारै बिथा मिटै अथ नाक रोग मुखी लोहू पिडव को पीनस अरस विकार। रोग होत इमि नाक में मुनिजन यत्न विचार ॥ पाढी हरदी मुरेठी दारुहरदी पीपर चमेली पत्र सब पीसि तेल में पचावै नाथ देय तो पीनस जाय अथ मुख रोग रुधिर सहित कफ कोप करि करत बदन तव रोग। जीभ दोप डर वासना फुरिया ग्वा संयोग ॥ कचनार की छाल औट कुल्ला करै तो मुख रोग जाय अथ स्त्री रोग काला तिल कै क्वाथ कै सीतल होइ तब गुड़ डारि पीवै तो फिर रज होय शिवलिंगी के फूल १ केरा कै छीमी कची १ खाय स्नान समय तो गर्भ रहै बिजौरा निम्बू कै बीज दूध सों खाय तो स्नान समय रति संग गर्भ रहै रति की समय नागकेसर दूध से पीवै चौथे दिन स्नान करि संयोग करै पुत्र होय गर्भ रक्षा कुम्हार की माटी जल में घोरि पीवै तो गर्भ गिरै न सही अथ सुखप्रसव बिजौरा बीज जटा मासी मधु घृत से पीसि खाय तो जल्द लड़का होय गुंजा पत्र ७ जरि कै खंड ७ कटि में बांधै वा सरफोंका कै जर कटि में बांधै तो सुख प्रसो होइ अथ अपरा पातन अंगुरी बार लपेट के कंठ में घसै तो गिरै चिचिंटा की

जर पीसि पग में लेप करै तो अपरा जाय अथ प्रसूत रोग अंग मर्द ज्वर कंप अरु प्यास शोथ गुरु गात। सो प्रसूत दुख देन की रहै त्रियन के साथ॥ पियै पीपरै डारि कै दस मूली को क्वाथ। सकल सूतिका रोग को तुरत लगावै हाथ अथ क्षीर वर्धन कादि सतावरि रंग तिय दूध संग जो खाय। तो वाके कुच कलस ते दूध बहुत अधिकाय॥ अन्य पीपरि दूध में चुरै के पीवै तो दूध बढ़ै अन्य बिलारी कन्द कै स्वरस पीवै तो दूध होय गौ महिषी सम अथ प्रदर रोग अति असवारी तुरंग की अति मैथुन संयोग। ताते तिय भग ते गिरत रुधिर प्रदर बिन भोग॥ चौराई मूल चाउर के धोवन से पीसि सहत डारि पीवै वा कुस के जड़ इसौत चाउर धोवन से पीसि सहत डारि पीवै तो प्रदर नाशै अथ रंडा गर्भ पातन विधि॥ पुष्य नक्षत्र में धतूरे की जड़ ले कटि में बांधै तो गर्भ न रहै॥ तिल गाजर के बीज गुर कलौंजी गुर में मर्दि कै खाय तो गर्भ गिरै अथ संकोचन भांग की वा मोचरस की पोटरी करि भग में राखै तो संकोच होय अन्य मोचरस कै चूर्ण भग में लगावै अथ लोम सातन अजवाइन अजमोदा हरतार संखचूर्ण सब पीसि तेल में पकावै सो लेप करै लोम झरै अथ बालक रोग। दुग्ध अन्न की दुष्टता होत बालकन रोग। ता को यह उपचार है समुझि करौ बुध लोग॥ जटामसी लोध ककूदनि हरद कलक तेल में पचाइ के नाभी जो पाकै तो लेप करै नीक होय॥ मुख रोगी अंबरू हरैं सैंधव मधु घृत पीसि जीभ लेपै तो मुख नीक होय जो बालक दूध डारै तो भटकटैआ के फूल २ मधु से घुटी देइ पीपरामूल पीपरि चाव सोंठ चीत चूर्ण कै मधु संग चटावै दूध पचै ज्वर औषधि कुटकी चूर्ण कै मधु संग चटावै तो ज्वर जाय अन्य काकराशृंगी मोथा अतीस पीपरि चूर्ण कै मधु संग चटावै तो कास छर्दि ज्वर छर्दि जाय अन्य मोथा सोंठ अतीस हरैं कुरैया

काढ़ा के पिश्रावे तो पेट पीर बन्द होय श्रन्य काकराशृंगी पी
परि श्रतीस मोथा चूर्ण कै मधु संग चटावै तो श्रतीसार ज्वर
खांसी जाय श्रन्य पुहकरमूल श्रतीस पीपर काकराशृंगी
सब चूर्ण कै मधु संग खवावै तो सब ज्वर जाय श्रन्य बंसलो
चन चूर्ण कै मधु संग चटावै तो बालक के कास स्वास जाय
श्रन्य कुटकी चूर्ण कै मधु में चटावै तो बालक की हुचकी
श्रौर बमन मिटै श्रन्य मिश्री धवई के फूल पीपरि मिर्च चूर्ण
कै मधु संग पिश्रावै तो बालक के मूत्ररोग जाय श्रन्य मुख पाकै
तो पीपरि की छाल पानी में पीसि मुख में लेपै नीक होय
श्रन्य बालक रोवै रात्रि भरि सुख न पावै ता को बेल पत्र गू
गुल हरद छछूंदर की बीट धूप बनाय कै धूप दे तो सुखी हो
य श्रथ सर्प बिषोपचार सूर्य्य वृषराशि के हों तो सिरसा के
बीज खाय तो बिष न चढ़ै सर्प न बीच न श्रावै श्रन्य जमालगो
टा वृकि के निम्बू के रस कै भावना दे इ २१ फेरि गोली बनावै
धरै थुक के संग घसि के श्रंजन करै तो सर्प को बिष मिटै॥
श्रथ बीछी के जमालगोटा पानी में पीसि लावै तो बी
छी उतरै श्रन्य सिंगिश्रा माहुर जल में घसि दरि में लेपै
तो बीछी विथा नाश्रो सत्य श्रथ घन खजूरा दोहा॥ म
नसिल गेरू दो हरद कीयहि लेपन श्राइ। कै दीपक के तेल
ते खन खजूर बिष जाय॥ श्रथ मकरी हरद दोऊ मंजीठ श्र
रु गजकेसर सुपतंग। सीतल जल सो लेप कै करु मकरी वि
ष भंग श्रथ बिष खाय ता को घृत मधु सेंधव नीम के पा
न मिर्च लै खाय। बिष कहिये द्वै भांति के स्थावर जंगम जा
य श्रथ तालू पीड़ा ज्यों सेमर के पेड़ में कांटे वहुत दिखा
इ। मुख में फुड़िया होय त्यों जोवन पिड़िका श्राइ॥ बरुन के
क्वाथ कै मुख धोवै जाइ फेर चंदन मिर्च लेपै तो जुवान की
पीड़ा जाय श्रथ कस दोष वहें गलश्ररु कांखपै कांधेपर

जव स्याम । पित्त कोप ते पीर जुत फुंसिका कक्षा नाम ॥ कूट सिलाजित देवदारु पीसि के फदकाय के लावे तो कक्षा जाय अथ गुदा रोग हगत निकसि आवै गुदा वेगन भीतर जाय । ताकोय ह उपचार है रित सो देहु लगाय ॥ सज्जी सोंठ दही अमिलबेत कल्क कै घृत में पचावै सिद्ध घृत खाय तो गुदभंग पीड़ा सब मिटै सत्य ॥ अथ जमालगोटा सोधन जैपाल भैंस के गोबर में राखै दिन ३ फेर गरम जल ते धोवै फेर खरिल करै छिन फेर नवीन खपरा लैके पीठी उहै लेपै जब तेल सोखै तब निरस धूरि सम होय तो भावना देइ निम्बू नीर से तो शुद्ध सब योग्य॥ इति ॥ जैपाल शुद्धिः सारक तीक्षन पित्त कफ हरत तुज्वर तत काल । उदर गुल्म अरु सीह हर गुरता हर जैपाल अथ बमन बिधि बरषा सरद बसंत में बमन बिरेचन होय । करवावै पुनि बेर तव बहुत सुखी नर होय ॥ कूस परवर नीम के पात लै काढ़ा कै घृत संग पीवै बमन होय ॥ पित्ते ॥ मैनफर दूध संग पियै बमन होय ॥ बात कफे ॥ सेंधो पानी गरम कै पियै तो बमन होय अर्जुन रोग जटामासी काढ़ा से बमन हो बिष दोषे ॥ अथ विषसोधन कूटि के बिष बस्त्र मो पोटरी कै छोरि कै दूध सेवा गौ के दूध में डोला यंत्र कै आंच दे पहर १ तो शुद्ध होय गुण बल करै जूड़ी सीतस्तंभ बात रक्त कुष्ट कास स्वास सीह उदररोग बवासीर हरै औ मद अथ उप बिष सोधन मदार धतूरा सेहुड़ कनइल करिहारी घुंघंची अफीम सेंहुड मदार कनइल ए सोधे नाहीं जात गुन बड़ा है अर्क कुष्ट खाजु दाद बायु बिष कफ रक्त पित्त बवासीर नाशकं सेंहुड़ रेचन दीपन तीक्ष्ण मूल आम गुल्म उदर हफारा बिष हरै सीहा कुष्ट वायु उन्माद पांडु नाशै । इति सेहुंड़ गुणम् अथ कनेल नेत्र को कृमि कोट व्रण कंडू हरन लघु सोइ अथ करिहारी सोधन करिहारी गोमूत्र में धरि राखै पहर ८ तो शुद्ध होय । गुन ।

कोढ़ सोय ब्रण शूल कृमि अरस हरै लघु लेपि कहि हारी रस पित्त हर गर्भ गिरावन मेषि अथ गुंजा सोधन गुंजा कांजी मे औटै पहर १ तो शुद्ध होय गुन नयनरोग ब्रण पित्त कफ इन्दु लुप्त हरि लेइ। बार बढ़ावै बहुत ही खाय नास करि देइ

अथ अफीम सोधन अदरख के रस के भावना देइ तो अफीम शुद्ध होय गुण बातपित्त को हरै करै ग्राही कोसोषक। मद तृष्णा अरु दाह करै मोहक गुण पोषक॥ करै धातु को स्तंभ कही पाचन अरु दीपन। अतीसार को हरै हरै संग्रहणी धरि मन॥ क्रमक्रम सो सेवै जो जन तब गुण दायक होय वह। या विधि अफीम गुण लेइ सुनि बिन क्रम अति दुख देइ वह॥ **अथ धतूरा सोधन** धतूरा को बीज गौमूत्र में भिजोवै पहर ४ फेरि मलि कै बकला भिन्न करै तो शुद्ध होइ॥

अगिनि करन अरु वमन ज्वर हरत खाजु ब्रण जोर। कृम ज्वर हर गुण उष्ण बिष हर यह कनक कठोर॥ **अथ कुचिला सोधन** कुचिला घृत में भूजे तो शुद्ध होय। कुचिला कटु नी छन तिक्त उष्ण हरत है बात। कूकर को बिष कफ हरै अरु उनमाद बिलात॥ अन्य हरैं मिर्च्चे सोंठि अबरा पीपरि पिपरामूर बाइभिरंग मोथा तज पत्रज ये सम भाग जमाल गोटा निसोत भाग ८ मिश्री भाग ६ सब चूर्ण कै मधु सो गोली बांधै कर्ष प्रमाण खाय प्रातै १ जल शीत पीवै ज्यों ज्यों त्यों त्यों दस्त होय जब बन्द करना चाहै तब गरम जल पीवै बन्द होय **तस्य गुण** विषमज्वर मंदाग्नि पांडु कास बवासीर भगंदर कुष्ट गुल्म गलगंड प्लीहा उदरदाह छर्दि प्रमेह नेत्ररोग बात अध्मान मूत्ररोग पथरी इन रोगन को नाश करै **अभयादिमोदक॥ अथ सेहुआ दाद खाज गज चर्म चिकित्सा** पचवै करुवे तेल में हरद अादद लदंग। दाद खाज गज चर्म में मलि सेंहुआ को करु भंग अन्य

किरवारे होऊ हरदका कमानिका पात्र करुवो तेल पवांर के बीज मट्ठा के साथ सब औषधि पीसि के उबटन करै तो खाज दाद नरहै अन्य निकुदा बीज पवांर के अरु मूरी के बीज। मठा मिले सम पीसि के पीठी तलगहि कीज॥ यह औषधि को उबटनो करै अंग यह ख्याल। सिहुआ पामा दाद को दूर करै ततकाल॥ अथ नेत्ररोग चिकित्सा अजे पाल के दूध से घंसि कपूर जो नैन। फूली करै छोटी बडी अ ह पावै नर चैन॥ अन्य पीपरि त्रिफला लोध अरु लाख लु सेंधो नोन घसि भगरा के रंग से करु गोली नर तोन॥ घ सि गोली अंजन करे यह गुन सरस बिधान। तिमिर कांच कडू फूली नयन रोग तम भान॥ इति नेत्ररोग॥ अथ घुमनी जवासा का काढ़ा के घृत संग पीवै तो भ्रम जाय अन्य अबरा का रस मिश्री संग खाय तो भ्रम जाय॥ अथ निद्रा जाय मधु घोरि के लार मिलै के अनजन करै तो निद्रा जाय तथा सेंधो सरसों मिर्च गोमूत्र सों घसि नास देइ तो निद्रा जाय अथ निद्रा परै पिपरामूर गुड़ सा नि के खाय तो निद्रा परै अन्य भूंजी भांग मधु मिले के खाय तो निद्रा परै अन्य भूजी भांग भैंस के मुंह के फेन में पीसि पद के तरवा में मले तो नींद आवै अथ मद विभ्रम खांड घृत मिलै के खाय तो मदविभ्रम जाय अन्य त्रिफला चूर्ण मधु मिश्री ले खाय वा गुड़ आदी खाय तो मद मूर्छा सोक मिटै अथोपविषबाधिकनाशौषधतूर वमन करै अन्य गोदूध खांड औरनि लै के खाय अन्य विजोरा का रस पीवै तो धतूरा का विष मिटै अन्य सरफोंका की जड़ पीसि पीवै तो हरताल खा ये का दोष मिटै अन्य करेमू की जड़ पीसि पीवै तो करि यारी खाये का मद मिटै अन्य सुहागा १२ घृत खाय तो विष खाये को दोष मिटै अन्य हरदी दूध पीसि के पीवै तो कनैल का विष मिटै॥ इति मद चिकित्सा॥ अथ दाह

चंदन पीपर कपूर पानी में पीसि लेप करै तो दाह मिटै
अन्य अंवरा जटा मासी बेर के पत्र चौरी के पानी से पीस
के लेपै पांव में तो दाह मिटै **अथोन्मादादिचिकित्**
सा पुहकरमूलदूधभात मधु मिलै के खाय दिन २१ तो उन्माद
जाय अन्य तगर मुलेठी कंजके गूदी दाख परवर की जड़
मजीठ बचा हींग सरसों करैआ हरदी केवाच त्रिफला
चीन बायभिरंग असगंध कंकोल मिर्च नीम की छाल
मोथा सौंफ कूर सोंठ बचा कंजाकी गूदी सरसों सम
लै गोमूत्र में भिजोय राखै दिनरात्रि फेरि पीसि गोली ब
नावै मरबेर सम प्रातखाय१ तो बैलान नीक होय ॥
इति प्रचेतन गुटिका ॥ **अथ सरस्वती चूर्णम्** कूट अ
सगंध सैंधो अजमोदा जीरा त्रिकुटा बच पाढ़ी हरदी सम
लै चूर्ण कै संखपुष्पी के रस में भिजोइ राखै दिनरात्र फेरि
सुखाइ के चूर्ण खाय २२ घृत मधु संग दिन तो बैलान नीक
होय बुद्धि निर्मल होइ **अथ तैलम्** हींग सोंचर पीपरि
मिर्च सोंठ२पै·घृत४पै·गोमूत्र १६पै·सब घृत में पचै के खाय१४
तो बैलान नीक होय **अथ भूतोन्माद चिकित्सा** रवि
दिन सिरसा का फूल उल्लू की बिष्टा ऊंट के बार कुत्ता की
बिष्टा बिल्ली की बिष्टा गंधक सफेद घुंघची सम लै कूट क
रि तेल में सानि कै धूप दे तो भूतोन्माद न रहै अन्य नीम
पत्र बच हींग केंचुल सरसों मिलै के धूप दे तो चुड़यल
छूटे **अथ भूतरक्षामंत्र** ॐ नमो हरि हिरण्यकश्यप ब
क्षस्थल विदीर्णाय भूत प्रेत पिशाचकाय डाकिनी शाकिनी
कुलोन्मूल नाशाय स्तंभय २ समस्त दोषान्हन २ सचल
२ कंपय २ मथ २ हुंफट ठः ठः यहि रुद्रोजयति स्वाहा ॥
जप१०० करै तो ब्रह्मराक्षस छूटै **अथ अपस्मार** ऊंट
के पेशाब में मिर्च पीसि नास देइ तो अपस्मार मृगी न रहै

अथ बात व्याधि हेतपाय अपनी कुपित बात गहत ज सब अंग । तब पीड़ा इमि होत है भखी वायपरसंग ॥ खुरासा-नी बच देवदारु सोंठ कटैआ की जड़ सम भाग लेकाढ़ा कै पीवै तो अंग पीड़ा जाय अन्य असगंध वा कुरथी कै धतूरा के मदार के पात बांधै तो पांव की पीड़ा मिटै अन्य हींग ची-त की जड़ का बकला २ सोंठ बड़ि १ गंधक सोधिके १ सोचर संधा १ हर्रा १ अंवरा १ वहेरा १ पिपरामूल १ गुड़पुराना १ सु-हागा फुलै कै १ कुचिला ८ दूध में सोधि कै बकला छीलकै सब चूर्ण कै निम्बू के रस से पीसि गोली बांधै प्रमाण मासा भर का सो खाय सो के प्रातै तो सर्व बात व्याधि जाय ॥ अथ लहसुनादि सर्व वाते लहसुन १२ गो दुग्ध १० घृत १ जीरा २ सोंठ २५ पीपर २५ त्रिफला २५ पिपरामूल २५ गुड़ पुराना ११ लहसुन दूध में सोंठ के खोवा करै तो घी में भूनै म-धुर होय तो गुड़ का पाग कै सब औषधि मिलावै चूर्ण कै के घृतपात्र मे धरै प्रात खाय तो सर्व पीड़ा पक्षाघात रोला सब नीक होय अन्य लहसुन को रस ४ तिल का तेल८ में पचै कै पीवै तो संधिगत अस्थिगत मज्जागत सब पीड़ा ना शै अन्य कडू तेल १ रेंडी ०१२ तिल का तेल २ धतूरे के र स में डारि के रस ०२ लौकी के रस ०२ गदह पूर्णा का रस २ रेंड की जड़ का रस ०२ असगंध २ अकवड़ २ चीत सहिंजन २ केवैआ २ वरिआरी ०२ नीम के छाल ०२ करिआरी ०२ बकायन कै रस ०२ सरिवन ०२ पिठिवन ०२ कटाई ०२ गु रखुल ०२ खंभारि २ पाडर २ बेल २ अगेथु २ इन्द्रानि २ सतावरि २ कायफर २ बिदारी कंद २ थूहर २ मदार २ सफेद कनेल १ सब का काढा कै कै तेल में पचावै क्रम ते त्रिफला २५ असगंध २५ रासन २५ धनिया २५ बच २५ देवदारू २५ कलौंजी जवाखार २५ साजीखार २५ तील

थोया २५ लोन पांचौ २२५ कायफर २५ भारंगी २५ निसोद्र २५ गंधक २५ पुहकरमूल २५ सिलाजीत १२ बच्छनाग १२ सब औषधि पीसि कै डारि सिद्ध होय तो सीसी में राखै सो सीसी माटी मढ़ि कै भूमि में गाड़ै महीना बार निकासि के देह मे लावै तो सर्बांग बात गोला पच्छाघात गृद्धसी आमबामंडल बहिरो कुष्ट संधिगत बात बिकार ये सब रोग जांय- स्नान खट्टा मिट्टा बादी परहेज दाल रोटी खाय अन्य परहेज ॥ इतिविषगर्भ तैलम् ॥ अथ कंप बात । पखर की जड़ १२ असगंध १२ बच १२ अतीस १२ सब मेदा कै दही मे खाय १२ प्रात तो कंप बात जाय अन्य पारा १२ गंधक १२ मैनसिल १२ सब एकत्र करि कडुवे तेल में खरिल करै सो बस्त्र में लेपै बाती बनावै दृढ़ सो बाती लोहे के सूजा में छेद के नीचे धरै पात्र में तेल चुवावै सो तेल अंग में लेपै तो कंपबात जाय अथ रक्त बात हर्रै मोथा सोंठ काढ़ा कै पीवै तो रक्त बात जाय अन्य रूसा गुर्च रेंड की जड़ काढ़ा कै रेंड़ के तेल संग पीवै तो रक्त बात जाय अन्य मंजीठ सरिवन कराथल जेठी मधु मिश्री सम लै दूध में पीसि रेंडी तेल में पचवै सो तेल लगावै तो रक्त बात जाय अन्य मोम मंजीठ राल रेंड के तेल में पचै कै लावै तो तथा भवति अौ बमन जुलाब रक्त क्षेम हित है बात रक्त का अथ उरस्तम्भरोग गदा पूर्णा सोंठ देवदारु भेला गुर्च सरिवन पिठिवन कटाई दोनों गुरखुलाबेल अगथ्रू सरिवन खंभारि पाड़रि इन के काढ़ा तें उरस्तंभ मिटै अन्य धनसादि तैलम् तेल कडुई तिल कै ।१ रेंडी का ।१ सरसों का ।१ राई का ।१ कंकूदनि का ।१ सर्व तेल एकत्र करि कराही में चढ़ावै जब खर होय तब धनेस चुरै कै डारे पचवै पुनः चमगोदर चुरै कै पचवै पुनः सियार चुरै कै पचवै पुनः जंगली कबूतर चुरै

कै पचवै फेरि तेल छानि के पुनि कराहीमें चढ़ावै तबये औषधि माहुर२ करिहारी१ कूट२५ कायफर२५ कारीजीरे २५ लोन पांचौ २।२५ सज्जीखार२५ जवाखार२५ सोराक लमी२५ हरदी२५ दारुहरदी२५ त्रिकुटा२५ तजपत्र११ इलाइची२५ सब कल्क कै पचावै सिद्ध होय तौ ऊरुस्तंभ बाहुस्तंभ गोला पक्षाघात गृद्धसी कंप बात धनुर्बात एते रोगजाय बातबिकार को न रहै अथ आम बात चिकित्सा।

गदह पूर्ना जवासा हरदी दारुहरदी गुर्च कढ़ाकै गोमूत्र गुर मिलाय कै पीवै तो आम बात जाय अन्य अंबल१९ पानी४ मे भिजोय राखै दिनरात लेहि पानी कै काढ़ा पीवै दिन तो आम बातजाय अन्य अंबराके काढ़ा सोंठि रेंडीका तेल डारि कै पीवै दिन ३ तो असाध्यौ आम बात जाय अन्य उटनी का दूध पीवै तो जाय अथास्वबातादौ वृहत्सैंधवादि तैलम् सेंधो हरोरासन सोंफ जवाइन साजीखार मिर्च कू ट सोंठ सोंचर वायबिरंग अजमोदा जीरा पुहकर मूल जेठीम धु पीपरि पैसा पैसाभर लै चूर्ण कै तेल रेंडी का १६ सोंफ १६ चौगुने नीरमें चुरे जो तुर्य्यांसशेषरहै १६ तो तेल मेंपचावै फेरि कांजी३२ पचावै फेर दही का कतरा ३२ पचावै तब तेल छानि लेइ फेर कराही में चढ़ाइ कै जब खर होय तब चूर्ण डारि के ३ सोतल देहमें लगावै तो आमबातजाय अग्निकम करै सर्वबा त जाय कटि सूल संधी पीड़ा पार्श्व पीड़ा छाती पीड़ा श्लेष मा ये रोगजांय अथ शूल रोग सखकी मैदा३ सोंचर३ हींग भूंजी पीपर मिर्च सोंठ सब मैदाकै गरम पानी में पीवै तो त्रिदोषशूल जाय अन्न पचै न शूल करै तो जवाखार मधु बिजौरा के रस ते पीवै तो शूल जाय अन्य हरिनके सींग चूर्ण कै सरवा में धरके भस्म करै सो भस्म मासा१ घृत में सानि खाय तो महा शूल मिटै अन्य रेंड़ी की जड़ का काढ़ा

जवाखार डारि पीवै शूल जाय अन्य सोंठ कोकादा सोंचर हींग रेंडी का तेल मिलै कै पीवै तो शूल जाय अन्य हींग जीरा सोंचर पीस पीवै तो शूल जाय अन्य कुचिला २ लौंग २ सम लै आदी के रस ते खरल करै पहर २ फेरि गोली बांधै झर बेरा समान सो खाय तो शूल जाय अन्य हरदी की पाती मिचै पीस पीवै तो शूल जाय अथ वह्नि कुमारो रसः जवाखार सज्जीखार सुहागा लोन पांचौ त्रिकुट त्रिफला लोहसार लौंग चीता चाव अनार कै वकै नारंग का सम भाग कै चूर्ण करै सो निम्बू के रस ते घोटै दिन ३ जंभीरी को दिन ३ गुर्च के रसते ३ अमिलबेत के काढ़ा ते गोली चनाप्रमाण बांधै सूक के साथ खाय तो आठौ शूल जाय अन्य पारा शुद्ध १२ गंधक शुद्ध १२ विष शुद्ध १२ लौंग १२ जायफर १२ त्रिकुट ३६ त्रिफला ३६ हींग भूजी जवाखार १२ साजीखार १२ सुहागा १२ सेंधो सोंचर पा गारिकर ३ शंख की भस्म १२ अमिली का रस १२ पीपर का खार १२ लट जीरा का खार १२ सब एकत्र कै अदरक के रसते खरिल करै दिन १ पुनः जंभीरी रस ते खरिल करै दिन १ चना प्रमाण गोली बांधै खाय गोली १ दिन ४९ तो असाध्य शूल नीक होय अन्य सख की भस्म २५ हींग भूजी १२ त्रिकट २५ सेंधो २५ सब एकत्र कै मैदा करै सो खाय तो पेट की पीर जाय अन्य सेंधो चीत पीपर पैसा पैसा भर लै पीस पीवै ऊपर ते गरम जल पीवै तो पेट की पीर शूल जाय अन्य सोंठ २५ मोथा २५ पीस गौ के घृत में गरम कै लेप करै तो शूल जाय सोरा गरम कै लेपै तो शूल मिटै अथ उदर वर्त्ते हर बेसारवी सनाइमकइइ सकपेचा की जड़ निसोथ मिर्च अमिलतास की गूदी विधारा दंतिआ की जड़ मलूपारास सम भाग लै काढ़ा करै तेहि काढ़ा में जवाइन भिजवै ७ छांह सुखै सुखै फेरि घीकुवार के रस में भावना देइ ५

फेरि लोन पांचौ मिलावै सांभर सोंचर सज्जीखार जवाखार सेंधो ये सब मिलाय के निम्बू के रस में भावना देइ ७ सूखै तब खाय क्रम ते पहिले मासे १ पुनः २ पुनः ३ पुनः ४ पुनः ५ खाय कै गरम पानी पीवै मार होय जूड़ जल पीवै तो मार बन्द होय उदावर्त नीक होय अन्य हर्रा ६ तज ६ पीपरामूर ६ मिर्च ६ पत्रज ६ पीपर ६ मोथा ६ भारंगी ६ अंवरा ६ निसोत ६ दंती की जड़ का बकला रस म को मैदा कर मधु से गोली बांधे झरबेर प्रमाण गोली खाय १ जूड़ पानी पीवै मार होइ गरम पीवै बन्द होय उदावर्त जाय अन्य जमालगोटा टंक ८ सुहागा १ सोंठ ३ मिर्च २ गंधक औरासार ४ पारा ३ सब मिलै के आदी के रस में खरिल करै पहर ४ गोली बांधे रत्तीप्रमान सीतल जल के साथ पीवै तो मार होय दही भात खाय तो बन्द होय अन्य जमालगोटा रेंडी की गूदी हर्रा सुहागा भूजा जवाखार सम भाग लै चूर्ण कै सब की समान मिर्चा मैदा करै एकत्र मिलाय खाय रत्ती चार ४ गरम पानी पीवै तो मार होय उदर बिथा का जुल्लाब लौकी का गूदा सूखा सेंधो हरदी निसोत हर्रा बैशाखी सम भाग मैदा कै टंक १ खाय गरम जल पीवै जुल्लाब होय दही भात खाय तो बन्द होय ॥८॥ अन्य जवाइन मासे ६ रेंडी की गूदी तोला २ पुराना गुड़ तोला १ मिलाय के खाय उपरांत बीरा खाय मार होय ॥

अथ जुल्लाब कौतूहल पारा भाग १० गंधक अंवरा सार १० सुहागा भूजा १० सफेद फूल के अंकोहर की गूदी १० जमालगोटा २० पारा गंधक कज्जरी कै के सब औषधि में मिलावै तब दंतिजा के कांटा ते खरिल करै पहर ४ तब छांह में सुखाय के समान ममाखी लाय के एक नारियर में राखै दिन सात आठयें दिन निकासि के फूल की थारी में राखै टढ़ी कैके कार्तिक बैसाख श्रावण के घाम में तो तेल अवै तब

कपरा में धरि निचोय लेइ सो तेल नाभी में लेप करै तो दस्त होय और कंठ में लेप करै तो बमन होय फेरि चाउर धोय के पानी दूध चीनी पीवै और नीम के रस ते धोवै बन्द होय अथ गुल्म रोग चिकित्सा कुचिला कूट जवाखार सज्जीखार अजमोदा जवाइन बायबिरंग हींग सेंधो सोंचर पांगा सम भाग लै निम्बू के रस की भावना देइ ७ फेरि गोली बांधै झरबेरा सम खाय गोली १ तो गुल्म शूल मिटै अन्य जमालगोटा १२ लौंग १२ मोथा १२ दालचीनी १२ इलाइची १२ सुहागा १२ हींग भूजी १२ जीरा स्वेत १२ जवाइन १२ सोंठ १२ तेजपात १२ सेंधो १२ सार १२ अबरक १२ पारा १२ गंधक १२ मिर्च १२ सब एकत्र कै छेरी के दूध से घोटै वा अंवरा के रस ते खरिल करि पहर ४ गोली बांधै चना प्रमान एक गोली खाय तो गुल्म शूल सीहार कछुई बंध गोष्टी सब पेट की बिथा मिटै अन्य जंभीरी के रस १०० जीरा २५ सांभर २५ जवाखार २५ सोंचर २५ पांगा २५ टिकरा २५ राई २५ कूट २५ अजमोदा २५ जवाइन २५ ये सब कूट के एक पात्र में भरि के ऊपर निम्बू के रस भरदे मुख बन्द कै घाम में धरै जब रस सूख जाय तो मेरा करि खाय प्रमान ६ तो गुल्म शूल न रहै ॥ इति उदर रोगे निम्बू द्रवः अन्य जंभीरी का रस १०० हींग भूजी २५ सेंधो २५ सोंचर २५ सांभर २५ सरसों २५ त्रिकुटा २५ जवाइन २५ सब चूर्ण कै सीसी में धरि ऊपर निम्बू का रस भरै मुख बन्द कै अन्न में वा भूमि में गाड़ै दिन १० बाद खाय मासे ४ तो सर्व रोग उदर के जांय ॥ इति जंभीरी संधानम् उदर रोगे ॥ अथ कुमारी द्रवः लौह चुन ८ जवाइन १ अमिलवेत १ जीरा २ सोंठ १ पीपर १ मिर्च १ बहेरा १ पिपरामूल १ मूद १ सौंफ १ लवीष १ अंवरा १ चीत १ हींग भूजी १ हरो १ अजमोदा १ सोंचर १ धनिया १ बाइबिडंग १ सोरा कलमी १ गुरुच

घीकुवार का रस १०० सब चूर्ण कै माटी के पात्र में भरि ऊपर से कुमारी का रस भरि देइ मुख बन्द कै भूमि में गाडै दिन २० फेरि निकासै वस्त्र से छानि लेइ सो रस सीसी में राखै खाय मासे ४ रोज तो उदर रोग बिथा जाय ॥ अथ अदरक दूत: त्रिकटु १२५ हींग भूजी २५ सुहागा २५ चीत २५ लौंग २५ हर्रा २५ सेंधो २५ सब की मैदा कैना में निम्बू का रस ॥ १ डारै फेरि आदी का रस ॥ १ दही ॥ सब एक सीसा में भरि मिलाइ कै खाब मासे ४ भोजन के उपरान्त खाय तो उदर के सर्व रोग जांय संग्रहणी अतीसार जाय भूख बहुत बढै ॥ अथ वज्र खारेरस: उदर रोगे पांगा: सेंधो २ सोंचर २ सांभर २ सुहागा २ सज्जीखार २ जवाखार २ सब मैदा कै मदार के दूध में खरिल करै पहर ४ फेरि मदार के पात में लपेट कै हांडी में भरि के जरावै गजपुट आंच दै कै जब भस्म होय तो ये औषधि मिलावै त्रिकटु २५ त्रिफला १२५ जीरा सेत १२५ हरदी १२५ ची ५५ बिधारा ॥ २५ ये सब मैदा कै मिलावै सो रोज खाय मासे ४ तो उदर के रोग सब जांय ॥ अथ सीह चिकित्सा। सुहागा १२ मुसबरा १२ मैदा कै रूसे के पात के रस ते गोली बांधै मासा १ भर की सो खाय तो सीहा जाय ॥ अन्य पीपर १२ सुहागा १२ चूर्ण कै खाय मासे १ कुकुरौंधा रस में तो सीहा जाय ॥ अन्य त्रिकटु हर्रा समभाग ले अमिलतास के काढा में घोटै पहर १ फेरि थूहर के दूध में घोटै पहर १ तब गोली बांधै मासे १ सो खाय मधु संग दिन ७ पथ्य दही भात खाय तो जलोदर कबोदर गुल्म सीहा न रहे ॥ अथ मूत्र कृच्छ चिकित्सा कुटकी सेंधो लटजीरा की भस्म पाखानभेद इन का काढा कै पीवै मिला जीत शक्कर मिलाय के तो मूत्र कृच्छ जाय ॥ अन्य हर्रै गुखरू अमिलतास पाखानभेद जवासा इन को काढा पीवै तो मूत्रकृच्छ अपस्मार जाय ॥ अन्य इलाइची पीपर जेठी मधु पाखानभेद

रतुका गुखरू सूखा रेंड की जड़ समभाग काढ़ा के पीवै तो मूत्र कृ-च्छ्र अपस्मारी जाय **अन्य मूत्र कृच्छ्र पथरी चिकित्सा** बरुन की छाल ४ पानी १६ में चुरवैं जब चौथाई बाकी रहै तब छा-नि लेइ सो काढ़ा कराही में डारि के गुड़ डारै ४ तेहि मा सोंठि १ कं-करी के बीज १ गुखरू १ पीपर १ पाषान भेद १ दूब १ कुम्हड़ा के बीज १ खीरा के बीज १ हिनोला के बीज १ मुनक्का १ इलाइची गुजराती १ हर्रा १ बाइबिरंग १ सब मैदा करि डारै उतारि कै सो खाय प्रमाण १ प्रात सांझ १ तो मूत्र कृच्छ्र पथरी न रहै **अन्य** पीपर २५ हर्रा बैसाखी २५ सिलाजीत २५ चीत की जड़ २५ खां-ड़ में चूर्ण कै खाय २५ तथा **अन्य** तज पत्रज इलाइची ना-गकेसर लौंग तालीस मोथा रक्त चंदन गुखरू बंसलोचन जा-यफर जीरा स्याह त्रिफला खस मोचरस अतीस कंजा की गू-दी हरहरा की जड़ समभाग ले चूर्ण करै दूनी खांड़ मिलाइ के खाय मूत्र कृच्छ्र अपस्मारी पथरी नीक होय **अन्य** पाखान भेद १२ दाख २ मिश्री ४ एक में खरिल कै गोली बांधे २ सो धा-न के पानी में धोय के खाय अपस्मारी नीक होय **अथ पेसा-ब बन्द की दवा** मूस की लेंडी माठा में पीसि गरम कै नाभि ते पेड़ू ताई लेपै तो पेसाब खुलै **अन्य** रेह गरम कै लेपै तो खुलै **तथा** टेसू के फूल पीसि के पीवै तो खुलै **अथ प्रमेह चि-कित्सा** हरदी की मैदा ६ मधु मिलै कै खाय अंवरा के रस के स-खाय तो प्रमेह नीक होय **अन्य** अनार की कली मुख बंद २५ खैर दूधिया २५ मैदा कै दूनी खाड़ मिलाय प्रात ही खाय प्रमेह जाय **अन्य** गुखरू बड़ा के पंचाग १ काढ़ा के पाखान भेद सा १ मिलाय के पीवै प्रमेह नीक होय **अन्य** त्रिफला द हरदी इन्द्राइन की जड़ मोथा इनको काढ़ा मधु मिलाय पी तो प्रमेह नीक होय **अन्य** चंदन स्वेत २५ खस २५ नागके-सर २५ बरिआरी के बीज २५ इलाइची २५ पाढ़ी २५ आम

गूढी २५ जटामासी २५ इन्द्रजव २५ मंजीठ २५ अनार की कली २५ मोथा २५ नागवरी असगंध २५ पखाखरा २५ समके मैदा के दूनी मिश्री डारै खाय १॥ प्रातः ऊपर ते गाय का दूध पीवे तो प्रमेह बन्द होय अथ प्रमेह वंगेश्वर रसः पारा शुद्ध १ सिंगरफ गंधक आंवरासार शुद्ध रांगा हरिल खुरी १ सो लोहे की कलछी में चढ़ावे जब गरम होय तब पारा डारै तब उतारि के मुंड़ में डारि देइ फिर गंधक डारै खरिल करै पहर ४ फिरे के सीसा में भरै सो कपरौटी करै दृढ बहुत तब हांडी में आधी बालू भरै फिर सीसी धरै ऊपर फेर बालू भरै मुख लै फेरि आंच देइ पहर ६ पहिले दीपक आंच फेरी चंडाग्नि आंच देइ फेरि स्वांग सीतल होय तो रस निकासै सो रस खाय रत्ती २ भरि इलाइची पान के संग खाय ऊपर ते यह चूर्ण खाय ॥ असगंध नागरमोथा हर्रो बिलारी कंद सतावरि गुर्च का सत जेठी मधु बहेरा पत्रज गुखरू मोचरस केवांच के बीज पीपर केरा की जरि सम भाग लै तिह की बराबर मिश्री डारै १२ गौ के दूध में डारि के पीवै तो बीसौ प्रमेह नीक होंय मूत्र कृच्छ मूत्र घात अपस्मारी बहु मूत्री एते रोग जांय ॥ इति धन्वन्तर प्रकाशात् ॥ अथ प्रमेह शृंगार अभ्रक अबरक १ पारा सिंगरफ को टंक १ सोधा गंधक टंक १ सिंगरफ का रस टंक १ कपूर १ सुगंधबाला जटामांसी लौंग नागकेसर तज कूट जाविनी तालीस गजपीपर तेज बर धवई के फूल ये टंक टंक त्रिफला त्रिकटु मासे दुइ दुइ गुजराती इलाइची टंक २ सब मैदा के फेरि पानी से घोटै पहर १ फेरि गोली बांधै चना सम सो प्रात खाय गोली ४ फेरि बीरा खाय १ सोंठ खाय गांठ १ गोदूध चीनी पीवै मध्यान भोजन करै तो प्रमेह बन्द होय अपूर्व है अथ सोथ चिकित्सा गदा पूर्ण नीम का गाभा परवर सोंठ कुटकी हर्रे गुर्च दारु हरदी समभाग लै काढा कै पीवै तो सर्वांग सोथ नीक होय अन्य गेरू के बैसाका रस

छेरी का माठा मिलाइ कै लेप करै तो सोथ मिटै अन्य पीपर १२ चीत १२ सोंठ १२ मोथा १२ जीरा १२ कटेआकी जड़ १२ पाठी १२ हरदी १२ गजपीपर १२ मूर्व १२ जटा मासी १२ सब चूर्ण कै तातै जल संग पीवै १२ तो सोथ मिटै अथ शोथ पीडा चिकित्सा कुटकी १२ सुहागा १२ सोंठ १२ गदापूर्णा १२ देवदार १२ सब की मैदा करि कांजी तै बांटि कर लेप करै तो सोथ की पीड़ा मिटै अथ तैलम् तिल का तेल १ रासन २ गदापूर्णा २ रेंड की जड़ २ मूरी का रस १० कूट १० कायफर १ सोंठ १ सब औषधि मूरी के रस तै पीसि कै तेल कराही में चढावै खर होय तो औषधि पचावै सो तेल लगावै तो सर्वांग सोथ मिटै अथ अंत्र वृद्धि त्रिफला काढा कै गोमूत्र डारि पीवै तो अंत्र वृद्धि मिटै॥ अथ अंड वृद्धि चंसुर रेंडी का तेल घी मिलाय के पीवै तो अंड वृद्धि मिटै अन्य जीरा सेंधो रेंड की जड़ कूट हुरहुर बच समभाग ले कांजी तै पीसि लेपै तो अंड वृद्धि जाय अन्य गाय का घी १ लै घी २५ मैदा कै घी मिलाय कूं धोंइ माथरै घामे दिन ७ राद लेपै तो अंड रोग मिटै अन्य तैलम् हरतार तबकी २५ सिंगरफ २५ संबरा २५ गंधक २५ तेल तिल का ४ संभालू के रस मैं सब पीस के पचावै सो तेल लेपै ऊपर तै तेल के पत्ता गरम कै बांधै तो कुंड रोग मिटै अंड वृद्धि न रहै अन्य नीम की छाल लहसुन माजूफल चीत हरतार सम भाग लै गौ के माठा में पीसि लेपै और ऊपर तै रेंड के पत्ता बांधै तो अंड वृद्धि मिटै अन्य बेल की जड़ पाडर कै चीत कटेआ दोनो जवाखार कंजा सहिंजन निसोथ कैथा भैलावां विडंग सोंठ पीपर नूट सज्जी जवाखार लोन पांचौ सब चूर्ण कै तातै जल से वा मद्रा से पीवै १२ तो अंडकोश अंड वृद्धि मिटै अथ गंडमाला चिकित्सा त्रिफला २५ कचनार २५ गुगुर ४ चूर्ण कै मधु संग खाय तो आरोग्य होय अन्य तिल का तेल ८ कराही में चढाय खर करै तो छछूंदर चोटी चाटी डा

जब जरै भरले तो उतारि के घोटै घरी १ सो तेल लेपै तो गंडमाला न रहै अन्य भेलांवा कौसीस चीत दंती की जड़ गुड़ समभा-ग ले सेंहुड़ के दूध वा मदार के दूध में खरिल करै सो लेपै तो गंड माला न रहै अन्य कारे सांप की भस्म घी में सानि के घाव में लगावा करै तो अपची गंडमाला न रहै अथ भगंदर चिकित्सा हरदी चमेली के पात ६ सोंठ ६ गुर्चे जल ते पीस लेप करै तो आराम होय अन्य हरदी अंवरा दंतिआ पीसि लेपै तथा अन्य सिंगरफ के पारा २ सोधी गंधक ४ दोनो खरिल करै पहर ४ फेरि गंधक प्रसारिणी के रस ते खलै दिन भरे सरस डारै २४ बेर सो यही भांति खलै दिन ७ फेरि सीसी में भरे सो मुख बंद के खात खोदै हाथभर का लम्बा चौड़ा तामें घोड़े की लीद भरै बीच में सीसी धरै फिर लीद से भरि के बन्द करै महीना भ राखै बाद निकारै सो खाय रत्ती ४ पान में वर्ष दिन पर्यंत तो भगंदर नीक होय नाडीव्रण नासूर वल्मीक ये रोग मिटैं जरूर के ॥ इति वल्मीक चिकित्सा ॥ हथेरी बगल कांध गटई संधि जंघा इन जगहों में छिद्र होय नासूर की नाईं बहै वा सूजा रहै सो वल्मीक है अथ व्रण रोग त्रिफला ३ पीपर २ गूगुर ५ कूटि के खाय १२ तो व्रण जाय तथा त्रिफला काढ़ा के गूगुर डारि ६ पीवै नीक होय अन्य सद्यो व्रण वरिआरी का रस घाव पर निचोवै तो पीड़ा मिटै अन्य केवैया की जड़ पीसि घी में भूजि वस्त्र में पोटरी कै घाव सेंकै वा चोट सेंकै तो पीड़ा मिटै अन्य सरफोंका की जड़ वा सहदेई पीसि तेल में चुरै के फाहा देइ तो घाव नीक होय अन्य नीला थोथा १२ सिंगरफ़ १२ मुर्दासंख १२ खैर १२ मजीठ १२ मोम १२ कप तेल १२५ मां चुरै के फाहा देइ तो घाव पूरै पीड़ा मिटै अथ अग्नि मा जरै ता की दवा ममाखी का लेप करै तथा घी मां चुरै के मोम लगावै तथा जव जराय के पीसै सो तेल में

फेंटि लेपै तोजरे की पीड़ा नीक होय तथा नीम का रस कूट अंवरा पीसि लेपै तथा कूट जेठी मधु चंदन रेंड के पात दूध सों पीसि लेपै तोजरा नीक होय अथ वलाल गरमी चिकित्सा ईंगुर २५ जायफर ३ तिहमें कोरि कै भरै फेरि माटी से लेपट सुखावै फेरि भौक मां डारै फेरि बूकि कै सुहागा१२ माजूफल १२ बूंकि मिलावै पानी तें गोली बांधै सो एक वटी हुक्का में लेइ दिन ३ तो गरमी जाय अन्य मिर्च १२ लौंग १२ रूमीमस्तगी १२ अकरकरहा १२ वायभिरंग १२ भेलावां अजमीदा १ सब के सम गुड़ डारै कूटै ताकी गोली बांधै मासे २ खाय साम का पथ्य दूध भात खाय गरमी न होय अन्य लौंग इलाइची१२गुज १२ दाख मुनक्का ६ मिर्च ६ जमालगोटा की गूदी१२ बेरी का बांदा स्याह गुड़ पुराने ते गोली बांधै झर बेरी समसो खाय पथ्य सूखा भात खाय मात तो गरमी जाय अन्य मोम तोला१ चीनी तो१ पीसि पुरिआ करै ७ सो खाय ऊपर गरम पानी पीवै नीक होय अन्य सिंगरफ मासे ४ माजूफल मासे ४ अकरकरहा मासे ४ सुहागा मासे ४ सब की गोली बांधै ४ सो एक गोली हुक्का में भरि के लेइ सांझ को रात्रि भर सोवै न प्रात दूध भात खाय तो नीक होय अन्य कमीला ६ लीला थोथा ६ राई ६ तिपुरी ६ कौड़ी की भस्म ६ सुपारी की भस्म ६ हरदी की भस्म ६ मैनफल ६ बिजौरा की पत्ती ६ सब पीसि के घी गरम होय तो पचावै फेरि उतारि कै घोटै पहर १ सो लगावै तो अच्छा होय तथा तूतिया सती २ पपरी खैर२५ मुरदासंख२५ सब नीम के रस ते घोटै सो वस्त्र में लेप कै बांधै तो गरमी जाय तारू फूटे की चिकित्सा खैर टु १ कपूर चिनिया २५ लौंग २५ सुपारी चिकनी २५ बंसलोचन २५ कंकोल २५ सब मैदा कै पानी में गोली बांधै झर बेरी समसो एक गोली मुख में राखै जब चुकै तब औरडारै यही तरहतारू

नीक होय अथ सोजाक चिकित्सा सतावरि २५ गुरबरू २५ केवांचके बीज २५ सिंहारा २५ नागकेसर २५ तालमखानाक बीज बन्द २५ बबूल का गोंद २५ केसर २५ छुहारा २५ सिंगरीब बूल की २५ दूध बरगद का २५ सब के बराबर मिश्रा चूर्ण कै खाय २७ सहत में तो सोजाक न रहै अन्य खीरा के बीज २५ ककरी के बीज २५ अजमोदा २५ मुरेठी २५ बदाम २५ गेहूं का सत्त२५ पोस्ता के दानो २५ बबूल का गोंद २५ कतीरा २५ बिरोजा २५ गेरू २५ अफीम मासे १ सब मैदा कै केला के रस से गोली बांधै मासे ३ सो खाय प्राते तो सोजाक जाय अथ बिन्द कुशाद बकैना के फल २ सोंठ २ चूर्ण के समखांड गौ के दूध के संग खाय २५ तो बन्द कुशाद मिटै अथ अदृष्ट फोड़ा की औषधि अफीम २५ गोकीनेनू ४ हुरहुर ६ केवैका रस ६ एकत्रकैरगरै पहर ८ सो लगावा करै तो नीक होय अन्य भिलौंजी सेंधो क-सीस चीत पिपरामूर समभाग लै मैदा कै सेंहुड़ और मदार के दूध सों घोटि कै लेप करै तो फूटि बहै तथा नीब की पाती ति-ल पीसि के लेप करै तो मज्जा निकसि परै तथा नीम पत्र तिल दंती की जड निशोथ सेंधो सब मैदा के मधु में सानि लेप करै तो अदृष्ट फोड़ा नीक होय अन्य नीम पत्र म्योडी के पत्र कंजा की गूदी पानी से पीसि लेप करै तो घाव के कीड़ा जा तरहैं औरपू रि आवै बतौड़ी की दवा सूंती का चून मुसिलमान पानी ते पीसि सींक तें लगावै ऊपर ते नीम का पात बांधै प्रातही छोड़ै ऐसे दिन ३ करै तो बहिजांय तथा पुहकरमूल कूट मिर्च बच सेंधो हरदी सम भाग पीसि लेप करै तो मांस की गांठि मिटिजा य अथ मांस वृद्धि सिंगरफ १२ हरतार १२ मुरदासंख१२ तूतिया १२ मोम १२ नीम के तेल में मलहम कै फाहा लगावै तो देह गुल्म नीक होय अन्य नीला थोथा चोख साजीखार ह रदी सोनामाखी गेरू नौसादर सब पीसि लेप करै तो मांस

की वृद्धि गांठि मिटै तथा साजीखार चूना लेप करै तथा आ
दी का रस चूना लेप करै तो मांस वृद्धि बतौरी जाय अथ नासूर
सहिंजन १२ तगर १२ गुजराती इलाइची १२ देवदारू १२
जेठीमधु १२ पुहकरमूल १२ रक्त चंदन १२ सोंठ १२ मिर्च १२
सब मैदा कै गाय के घी में पचावै लगावै तो नासूर नीक होय ॥
अथ सर्ब फुरिया अंवरा ६ हरें ६ तूतिया ६ कमीला ६ मु
रदा संख ६ मूजी रेंडी की गूदी ६ सब मैदा के करू तेल में फेंटि
लगावै तो सब फुरिया नीक होय तथा हरदी २५ दारुहरदी २५
कमीला २५ तूतिया २५ इक्कुहरा २५ सब मैदा के करू तेल में पु
रैकै लगावै तो फुरिया नीक होय अथ कौसीसाद्यं घृतम् ॥
कसीस १२ हरदी १२ दारुहरदी १२ मोथा १२ हरताल १२ मैन
सिल १२ कमीला १२ गंधक १२ बायभिरंग १२ गुरूल १२ मोम १२ सी
र्वे १२ कूट १२ तूतिया १२ पिपरसरसों १२ सेंहुर १२ धूप १२
एक चंदन १२ रिंवा १२ नीम पत्र १२ कंज गूदी १२ सरिवन १२ ब
व १२ मजीठ १२ जेठीमधु १२ जटामासी १२ सिरसाछ १२
लोध १२ पद्माख १२ हरें १२ चकवड १२ सब मैदा करै और
घी ८ धोवे १०० बेर सो ताम्रपात्र में धरै और सब औषधि मि
लाय कै घाम में धरै दिन ७ नीम के सोटा से चलावै दिनभर में
पांच सात बेर आठवें दिन सीसा में धरै और लगावै तो कैसि
उ फुरिआ होय सोन रहे और कुष्ठ जाय दाद खाज बिचर्चि
क विसर्प विस्फोटक बात रक्त सिर के फोरा व्रण सोथ भगंदर
लूता मकरी बफौरी दद्दूरी गूंथी इन सब को नाश करता है न
हीं रहते अथ बेंवाई आदि जिह तें हाथ पांव फटें
पुराने भेड़ा की बसा मिर्च की मैदा २५ मिलाय के लगावै सांझ
बिहान और सेंकै तो हाथ पांव की बेंवाई न रहै अन्य पारा
१ तुलसी पत्र में धरै सो घिलावा करै मलमल तो नीक होय
बेंवाई ॥ अपरस औ लावा को विसर्प तिह को लक्षण

सब देह की खाल उचरि जाति है बिसर्प ते रंग लाल होइ जात
है पच पचात है और यही को सुर्ख बाद कहत हैं और यही ले
प तें सरकरा बुन्द नीक होत है ॥ लक्षण ॥ देह हाथ पांव में गि
रह परि जात है सो फाटि के बहत है मधु की सम की घीउ की स
म वा चरबी के माफिक अथ अपरस उकौता की चिकि
त्सा ईंगुर १२ सेंदुर १२ सेंधो १२ सुहागा १२ मोम १२ फटकरी
१२ रेंडी का बीर १२ सबकी मैदा कै भेड़ी के घी में मलहम करै
कचा सीं लगावै और बेरी की लकड़ी से बारि के सेंकै तो अपरस
उकौता जाय अथ उकौता चना की दाल सरसों सम भाग
लै पीसि के कुनकुन कै लगावै दिन ३ रेंडी के पात से बांधै प्रातै
दही से धोवै तो उकौता नीक होय अथ दाद खाज चिकि
त्सा पारा १ गंधक १ तूतिया १ पहिले पारा गंधक मिलै के
घोटै घड़ी २ फेरि लीला थोथा मिलाय के कराही में डारि गाय
का घीउ १२ भरि जस्ता से घोटै दिन ४ पचयें दिन लगावै
तो दाद और खाज और गजचर्म ये रोग मिटैं सत्य अथ दाद
चिकित्सा गंधक नैनूसा २५ अफीम २५ करायल २५ फि
टकरी २५ मिर्च १ कसौंजी की जड़ १ चवराई की जड़ ३ निम्बू
के रस ते घोटै पहर ४ गोली बांधि फेरि निम्बू के रस तें घोटि
लगावै तो दाद जाय अन्य माजूफल २५ धूप २५ सुहागा
कच्चा २५ गंधक छे छुआ २५ सब पीसि के गोली बांधै सो पा
नी से घंसि के लगावै तो दाद न रहै अन्य इलाइची बड़ी
का बकला १ सूती का चूना १ फाकली की भस्म कै दोनों भस्म
मिलै पानी में घोटि के लगावै तो दाद जाय सत्य अन्य अंब
रा धूप चोखी चक बड़ के बीज सिंगिया माहुर २५ सम पी
सि के पानी में डारि राखै दिन ८ नवयें दिन से लगावै तो दाद
न रहै अन्य तेल चमेली का ॥ सुहागा ३ तेल में फेरि घामे ध
रै दिन ३ फेरि लगावै तो दाद न रहै सत्य अन्य रसा चंद न

निबोदर ६ दूधिया खैर ६ अफीम ६ मिर्च ६ तूतिया ६ चकव
ड़ के बीज ६ सब की मैदा कै कागदी निम्बू के रसनें गोलीबां
धे सो गोली कागदी निम्बू के रस ते घंसि कै लगावै तो दादनी
क होय ॥ अन्य मदार की जड़ ३ रेंडी की जड़ ३ भटकटैया की
जड़ २ चकबड की जड़ २ म्योड़ी की जड़ २ असगंध की जड़ ३
धतूरे की जड़ ३ छेरी की लेंडी ३ तिल का तेल २ सब का कूटै
पाताल यन्त्र से तेल निकालै सो तेल लगावै तो दाद न रहै ॥ अन्य
खाज की ॥ सुहागा २५ मिर्च २५ कमीला २५ तूतिया २५
सब मैदा के घी में पचैकै लगावै तो खाज न रहै ॥ अन्य पारा
१२ गंधक १२ मैनसिल १२ तूतिया १२ सब मैदा कै करू तेल
में फेंटि के लगावै नहाय साम का खाज जाय ॥ अन्य खैर सु
हागा फटकरी तूतिया सज्जी कमीला समभाग लै मैदा कै
तेल में पचावै सो लगावै तो अपची खाज न रहै ॥ अन्य गंधक
मैनसिल हरतार हरदी दोनों सज्जी समभाग ले गोमूत्र सों पी
सि कै तेल में चुरवै सो तेल लगावै तो दाद खाज पाप विचर्चि
का न रहै ॥ अन्य हरदी रस पीती कै कुसुभ के मैदा करू तेल
में फेंटि लगावै तो पीती जाय ॥ अन्य सेंधो के मैदा करू तेल में
फेंटि लगावै तो रस पीती जाय ॥ गुड़ १२ जवाइन ६ खाय तो
नीक होय ॥ अन्य सरफोंका की जड़ का बकला २ जवाइन २
हरदी २ मैदा के खाय नीक होय रसपीती न रहै ॥ अन्य ॥
हरदी १२ जवाइन १२ घुंघुची १२ सब मैदा कै करू तेल में चु
रवै सो तेल लगावै तो हरदी रस पीती न रहै ॥ अन्य छंजन
की ॥ मनुष्य की खोपरी चीत की जड़ नीम की लकड़ी ये
तीनों चंदन की माफिक रगड़ के लगावै तो छंजन न रहै
॥ अन्य गुजराती बकुची सफेद घुंघुची ३ कसीस मेंहदी के पा
त सब पीसि लेप करै तो छंजन जाय ॥ अन्य अमिली की
छाल की भस्म रेंडी के तेल में फेंटि के लगावै तो छंजन जाय ॥

अन्य खेत गुंजा एक गिरगिटान करू तेल में पचै कै लगावैतो छंजन जाय अन्य सांप करिया की भस्म भेड़ी के घी में फेंटि के लगावै तो छंजन जाय अन्य अंजीर की जड़ का बकला मिर्च ६ हरताल १२ बकुची के बीज २५ सब कलोर गाय के मूत्र से पीसि लेप करै तो छंजन जाय अथ बहिरी रक्त मंडल की चिकित्सा लहचिचिरा की भस्म चूना गंधक १ मिले के लेपै सुन्न मिटै घाव में तिल का तेल लेपै ऊपर ते भंगरा की भस्म लेपै गूगुल १६ गुर्च १६ त्रिफला ४८ इनका काढ़ा करै तिह मां गूगुल भिजैरात्त दिन फेरि पीसि के छानि लेइ सो कराही में डारि औटै जब पाग सम होय औष धि डारै त्रिफला३ गुर्च १ त्रिकुट ३ बायभिरंग १ जमालगोटा की गूदी १२ वि धारा इनकी मैदा कै डारै फेरि घृत के पात्र में धरै खैर काढ़ा के संग तो बहि री मंडल कुष्ट न रहै तथा चूर्ण सरफोका ४ जवाइन ४ मजीठ ४ खांड १६ सब मैदा कै खांड मिलाय खाय १२ प्राते दिन ४८ तो अवश्य बहिरी मंडल न रहै तथा चूर्ण सरफोका ४ हरदी ४ जवाइन ४ म-जीठ ४ खांड १६ सब मैदा के खांड मिले कै खाय १२ प्रातहि दिन ४८ तो बहिरी मंडल न रहै अथ कुष्ट चिकित्सा निरगुंडी की जड़ गोमूत्र में चूर्ण कै पीवै तो हित है अन्य भेला वां २ गुर पुराना १ गो घृत ४ गो दुग्ध ४ त्रिकुटु २५ तज १२ पत्रज इला इची १२ नागकेसर १२ खेत जीरा १२ धनियां १२ सब को मैदा कै कपर छान करै और भेलावां का मुंहड़ा छोलि कै काट डारै सो पानी ८ मे चुरवै जब अष्टांश रहै तब काढ़ा छानि लेइ सो पानी औ दूध घोउ कराही मे खोया करै जब पाग के माफिक होय तब गुड़ डारै मिलावै फेरि औषधि कै मैदा डारै उतारि कै सो घृत के पात्र में धरै प्रातः खाय २५ तो सर्व कुष्ट जाय ॥ इति भल्लात तैलं सर्व कुष्टे ॥ अथ मरिचाद्यं तैलं सर्व कुष्टे तेल करू १ मिर्च १ नि सोय २५ देवदारू २५ हरदी दोनों १ जटामासी २५ कूट २५

रक्तचंदन २५ हरताल तवकी २५ बकुची २५ बच बड़ी २५ बच छोटी २५ ककूंदनि २५ बिष २५ दतिया कीजड़ २५ इदारुनि कीजड़ २५ कनेल कीजड २५ बरिआरा कीजड़ २५ मोथा २५ चाव २५ सिरसा का बीज २५ कु रैया की छाल २५ नीम की छाल २५ सरिवन २५ पिठिवन २५ गुर्च २५ सेंहुड़ का दूध २५ कंजा की गूदी २५ खैर की छाल २५ बरिआरी की जड़ २५ ककई २ जामुन २ गूलर २ कटूबरि २ अनार २ बरगद २ लटजीरा २ इन की जड़ैं लेप गोमूत्र ४ और गोब र का रस १ सो तेल में पचवे औ बनौषधि के काढा कैके पचवै औ पसाढी के औषध काढा ते पीसि कै पचवे फेरि सब पचै कै सीसा में धरै नित्य लगावै तो दाद खाज बहिरी मंडल कुष्ट नर है सत्य ॥ इति मरिचाद्यतैलम् ॥ **अथ अम्लपित्त के छर्दि की चिकित्सा तस्य लक्षणम्** गरे में दाह करै अमल चुकी आवे पित्त स्याह रक्त बमन होय तो अम्ल पित्त कहिये ॥ तस्य औषधि ॥ परवर सोंठ काढा कै पीवै तो मिटै अन्य चिराइता बकाइन त्रिफला परवर रूसा गुर्च पितपापरा भंगरा सब काढा कै मधु डारि पीवे नीक होय अन्य परवरा काढा कै आदी का रस डारि पीवे तो नीक हो य अन्य रेंडी की जड़ चीत्त जवासा काढा कै पी वे मूल बमन जाय अन्य दाख खांड हरें पीपर मधु से खाय तो दाह कै छर्दि मिटै अन्य बिजोरा का रस २५ मिर्च ६ मिश्री १२ मिलै के खाय तो अम्लपित्त मिटै **अथ बिसू चिका की औषधि** तिल का तेल हाथ पांव में मरदन करै तो बिसूचिका जाय **मूत्र स्थंभ को** मूस की लेंडी ज ल सो पीसि गरम कै ताते नाभी में लेपै पेशाब खुले अन्य करैला के बीज गुखरू सेंधो सम लै पीसि गरम जल सों पी वै तो पेशाब खुलै **अथ अंड वृद्धि** सहरी मछरी पीस लेपै

अंड वृद्धि मिटै अन्य कुशवारी खरी महकै कत्थापपरी छेउला की पत्ती मदार की कली हाथी का खूंट तेल कडु मलहम के लगावै तो असाध्यो अंड वृद्धि मिटै ॥ सेंधो जीरा हींग समलै तेल में पीसि लगावै दिन ७ तो अंड वृद्धि जाय अन्य त्रिफला गोमूत्र से पीसि पीवै दिन ७ तो अंड छोटा होय **अथ तिमिर** कागदी निम्बू के भीतर मिर्च भरै ७ सो माटी से मुख बन्द करि ढंढे में गाड़े दिन १४ बाद खोलै सो मिर्च घसि अंजन करै दिन ७ तो तिमिर जाय **अथ आमवात** कच्ची हरदी छील के कच्चे गौ के दूध ४ में खोवा करै खाय १८ तो आमवात जाय अन्य छिन्छुल की छाल सेंधो गुर्च अमरबेल सम लै भंगरा के रंग सों खाय तो देह का रंग लाल होय **अथ वंध्या करन विधि** रति समय सुर्मा खाय तुरंते हरदी ६ पीसि पीवै रति समय तो बंध्या होय ॥ हाथी की लीद सुखाय -- संग भग में राखै तो बांझ होय अन्य तिल का तेल लिंग में लेप रति करै तो बांझ होय अन्य शिशु के दंत आगे के लैरूपे के तवीज में पास राखै तो बांझ होय **कुत्ता काटने की औषधि** मूसे के बिल की माटी घाव में लगावै तो विष जाय विष खाय तो अंवरा पीसि सर्वांग लेपै फेरि जल से नहाय गगरी १०० तो विष उतरै अन्य गूलर के बीज शीतल जल से पीवै तो विष उतरै अन्य सुहागा पानी में पीसि पीवै तो विष उतरै अन्य सेंधो गो घृत मिलाय खाय विष उतरै अन्य सिरखा कसौंजी जर मोथा जल पीसि पीवै विष जाय **नहरूआ की औषधि** हरिना के सींग कागदी निंबू के रस ते घसि लगावै तो नहरुआ जाय **अथ रतौंधी** समुद्रफल मधु सों घसि अंजन करै तो रतौंधी जाय **अथ झांई** मिर्च ताड़ के दूध सों पीसि लेपै दिन तो झांई जाय **अथ हिचकी** कोदो वा मिर्च का धुंवा लेइ तो हिचकी जाय **अथ दाद खाज रक्त बिकार की चिकित्सा** धनिया मैनसिल गंधक अजमोदा त्रिकटु स्याह जीरा धतूर बीज सब तोला तोला लै मैदा कै सरसों के तेल में करि घाम में धरै दिन ३ बाद लावै तो निरुज होइ **अथ गंधक सोधन** गो दुग्ध ॥ में गंधक टंक १० धरि हांडी

में मुखबन्द करि आंच देइ पहर १ बाद जरै तो खुरचि लेइ हांडी तें जल में धोवै तो शुद्ध होय **हरताल शोधन** हरताल कणा करि चौरेह त जल में धोवै वार ३ तो शुद्ध होय **अन्य** हरताल चूना की कली हांडी में भरि बीच में हरताल धरि मुखबन्द कै आंच देइ पहर ३ तो शुद्ध होय **अथ मैनसिल सिद्धिः** मैनसिल टंक १० अजामूत्र में दोलायंत्र आंच पहर १ शुद्ध होय **अथ इन्द्री सिथिलो औषधि** चमेली के पत्र का रस कूट सुहागा मैनसिल पीसि तिल के तेल में पचवै सो छानि के लेप करै तो इन्द्री दृढ होय —

मरिचं सैंधवं कुस्था तगरं बृहती फलं। अपामार्गस्तिलंकुष्ठंयवा माखाश्व सर्षपात्त ॥ अश्वगंधा ततःव चूर्णं मधुना सह योजयेत्। अस्य संततलेपेतमर्द्दनाच्च प्रजापते ॥ लिंगवृद्धिस्तथा लोधः संहति भुज कर्णयोः। कर्णिकारजटा भंगा धत्तूर रस पेषिता ॥ छाया शुष्कागुटी कार्या स्वमूत्रेणानुलेपयेत्। दीर्घस्थूलं चकठिनं लिंगं तेनाभिजायते ॥ बलाश्वगंधा कुष्ठेग्नागजा पिप्पलिका रजः। महिषी सर्पिषा लिप्तं लिंगस्थौल्य करं परं ॥ कदली कर्णिकारत्वक् लोध्र माजूफलान्वितं। करे लामातृकाद्वहू स्फटिकं समभागिकं ॥ योनी स्तनं संकोचनं कुर्यात्। मातृका फटिका लोध्रं धातकी बदरी भयं। माजूफलमिदं चूर्णं योनि संकोचकारकम् ॥ **अथ संकोची करणं** हरदी गुरवहू केसरि मोथा रक्त चंदन खांड़ बट के सुतगा टंक टंक ले पीसि उबटन करै तो बाले व **अन्य** दाख चिरौंजी सरसों ख्श टंक टंक ले तेल में पासि उबटन करै तो सोभा युक्त संकोच होय **अथ गर्भ हेतु परीक्षा** चौपाई ॥ लालू रुधिर जाय त्रिब के बहे। आकुल चित्त रात्रदिन रहै ॥ पेटपीर सब अंगन दाह। जानौ गर्भ धरन की चाह ॥ **तस्य औषधि** कटु की जरि कासी बिस लेहु। द्वै द्वै टंक सहत सम देहु ॥ चार टंक शुभ खांड मिलाई। सेर गौ पय में पी जाई ॥ ऐसी भांति नारि जो करै। दिवस तीन में गर्भ हि धरै

अन्य चौपाई ॥ स्वेतरुधिर नीरसो वहै । होइ मंद गति मंद न वहै ॥ नाभी तरे उठै जो पीर । बाढ़ै आलस अवल शरीर ॥ सीस फिरै फीके मुख देख । गर्भ धरै चाहत सो लेख ॥ तस्य औषधि त्रिकुट टंक १२ जल ३२ में काढ़ा चतुर्थांस कै पीवै तो गर्भ रहै अथ गर्भ की परीक्षा चौपाई ॥ प्रथम पसेउ सिलाई हि जागे । वहुरि खटाई अति प्रिय लागे ॥ वेसं हार क्षिन क्षिन में होई । रहै नहीं वल तन में सोई ॥ भारी देह सदा कहलाइ । वैठत उठत कछु थहराइ ॥ वारवार उकलाई आवै । वहुत स्वाद पर चित्त चलावै कुच मुख होइ मसी कुरंग । रोमावली उठै सब अंग ॥ इन लक्षन युत देखहु वामा । जानो गर्भित है सुख धामा ॥ वाम ओर जो कोई भारी । तनया सांच जानो सो नारी ॥ भारी होइ दाहिनी कोख । पुत्र जान लीजे निरदोख ॥ मध्य हिये भारी जो होई । जान लेहु तो बालक दोई अथ लोम थातने गोदंती चूना कली केला के जल तें पीसि लेपै तथा चूना हरताल सिरसा के बीज सम पीसि लेपै तथा संखभस्म केला के नीर से लेपै दिन ३ तो लोम मरै सत्य अथ मुख शोभा का उवटन हरदी गुरवस्त सरसों केसर मोथा सोंठ कपूर टंक टंक रक्त चंदन टंक ४ लौंग चिरौंजी टंक १० सब तेल में पीसि उवटन करै दिन ७ तो मुख की शोभा होय कुरूपता मिटै सत्य अथ रति रंजन का मेश्वर मोदक असगंध मूसली केवांच मुंडी लौंग सतावरि दाख चिरौंजी जायफल गरी छुहारा दालचीनी जावित्री दुइ दुइ टंक लै चूर्ण कै गोदुग्ध १० सेर लै कराह में औटै भांग की पोटरी बांधि कराही में डारै मधुर आंच देइ जब आधा दूध रहै तब भांग निकारै दूध खोवा कै खांड ५२ डारै मिलै तो चूर्ण डारि लड्डु बांधै नारंगी सम सो सांझ कै खाय पीछे दूध पीवै १ तो रति समय तृप्त न होय अथ मदन बंगेश्वर रांग ५ कराही में कै औटै चंडाग्नि कै लोहे की करछी से घोटै पोस्ता की खोलरी ५१० मैदा कैथ रैसो सूत मू

मूरी देइ जरेजरे पर सिद्ध होय अनोपान सो देइ अथ वंग का अनोपान पान से खाय तो गर्भ होय लौंग पान से बंधेज होय हरदी का अशलावे कै घरिया के भीतर की कीट तुलसी की मंजरी पीपर ।-॥ भटी मैदा कै सब खरील करे सो खाय २ तो काश सांस खांसी पेट शूल मंदाग्नि वखट ईगोलापिलही सब पेट के रोग मिटैं भूख बढ़ै ध्रुव मिटै सर्व पथ दूध भात खाय दूध कच्चे संग सीत ज्वर मिटै लहसुन से व्यहावाई जाय काकराश्रृंगी कायफल से श्लेष्मा जाय मधु से पित्त जाय कंकोल से ज्वर जाय धनिया नीम खाये से पित्त श्लेष्मा जाय इन्द्रजव जल सों पीसि मिलै कफ श्ले राजाय कुशकी जर जल मे पीसि मिलै वाय गोला जाय हैं सुहागा जल में पीसि मिलै खाय या लेप करै तो ववेशी जाय इन्द्रजव सैंधो से ववेशी जाय काराजीरा पीपर सोंठ सें ववेशी जाय नागरमोथा संग ववेशी जाय लौंग जायफल संग गर्म देह अति मोक्षा मिर्च संग देह गर्म होय गी केनैनू में शीतल होय देह इलाइची संग शीतल होय स्वेत दूब सतावरि अंबरा संग सब दुख जाय गंधक दूध में बंधेज होय उतर लोना निम्बू बच खुरासानी अजवाइन इन चारिउ में मुख दुर्गंध जाय मूरी बीज उतरलोना संग नपुंसकता जाय माटा तेल मिलै नपुंसकता जाय चमेली बीज से नपुंसक होय गंधरी को गंध पसारणि साग मिलाय चालिस दिवस ताहि सो खाय पथ दूध भात करै तो नामर्द इ पावे करेला बीज से बंधेज होय विख जाय पथ दूध भात करै स्योंडी की बोडी मिर्च बंग मिलै गोली करै ३० आतै खाय १ पथ दूध भात करै गर्भ रहै ववुर के पात छांह में सुखै मैदा के ता मे खाय २४ई तो अंग वज्र सम होय पथ दूध भात सुपारी राख के संग अजीर्ण जाय वकुची के लैपात सुखाय देय कठीर ताहि सों खाय चकवर्सा खाय जो कोइ मर्द मर्द गर्भित तिय होय ॥ दोहा॥ अनोपान एते धरै जानि सबन को संग । रामदया कहि देत है दुइ गुंजा भरि बंग ॥ ॐ श्री श्री शिवाय स्वाहा ॥ यह मंत्र पढि औषधि खाय ॥ इति वंगेश्वर विधिः ॥

सर्वरोग ॥अथ विप्रेश्वर तांबा मारणम् तांबा टंक १०० कंट
क वेध पत्र के अग्नि में तप्त कै कै बुझावै गोमूत्र में ७ त्रिफला काढ़ा
में ७ निम्बूरस में ७ मीठा तेल में ७ गौ के माठा में ७ अमिलीरस में ७
कांजी में ७ सिरका में ७ फेरि हरतार टंक ४० औरा सार गंधक टंक
३० पारा कच्चा टंक २० वच २५ सुहागा २५ सब खलि मैदा करै फेरि
गुर चूना मिलै हांडी में ऊपर लेपै घामे सूखै तो भीतर पत्र धरै बु
कनी की पत्र में तह दै दै फेरि ढिया से बन्द कै मोहड़ा परई से बन्द
कै चूना से छापि लेइ सूखै दिन ७ चूल्हे पर आंच देइ पहर ५ पहि-
ले दीप सम फेरि खंड उपर पहर २ फेरि मन्द फेरि दीप सम फेरि स्वांग
शीत हो चूरा इति विप्रेश्वर सिद्धिः ॥ अथ विप्रेश्वर तांबा
का अनो पान लौंग इलाइची जायफर जाविची चीत ऊंट
कटारा के बीज अकरकरहा बेल तेजपात सब चूर्ण कै मैदा करै चूर्ण के सम तां-
बा लै पान के रस में गोली करै टंक प्रमाण सो पीपर संग खाय भात पथ्य चना की
रोटी खाय खारो खाटो ना रिख चावै तो सर्व कुष्ट जाय और चौरासी वायु विकार
जाय त्रिफला से खाय तो उर्द्ध कमल मिटै ॥ तांबा मासा १ संभालू दल का रस
मासा ४ मिर्च टंक १ लौंग टंक १ सब चूर्ण कै खाय तो ब्बेशी जाय और यही का
खाय पहिले दिन मासा १ दूसरे दिन मासा आधा तीसरे दिन रत्ती २ खाय तो
जलंधर जाय खारा खट्टा परहेज ॥ तांबा मासे २ हरैं मासे १ पीपर टंक १ अजमो
दा टंक १ सब मैदा कै मधु से चाटै तो वायु गोला जाय परहेज खारा खट्टा ॥ तांबा
मासे ४ छिउल के बीज टंक २ फिटकरी टंक ३ मिलै खाय तो पेट के क्रम मरैं फरै
तांबा मासे २ पाडर मासे २ घृत टंक १ जवाइन टंक १ मधु मिलै खाय तो भंवरि
मिटै और खांसी जाय तांबा मासे १ गुर्च का सत्व टंक २ खांड टंक ५ जवाइनि ५
मधु में खाय तो संग्रहणी और वातप्रमेह जाय खारा खट्टा परहेज तांबा रत्ती ६
त्रिफला मासा ३ सोंठ मासे २ सम मधु से पीवै तो दुष्ट संग्रहणी जाय खारा खट्टा
परहेज तांबा मासा आधा रूसे का रस टंक १ पिपरामूर टंक १ मधु से
खाय तो स्वास गंभीर जाय खारा खट्टा परहेज ॥ तांबा ४ खर
के फूल टंक ५ सोंठ टंक १ पीसि मधु से खाय तो रक्तपित्त जाय

खारा खट्टा परहेज पीपर संग खाय तो खांसी जाय मिश्री से खाय तो पित्त जाय तुलसी दल मिर्च सो खाय तो विषमज्वर जाय हींग से खाय दिन ७ तो वाय गोला जाय गूगुल से खाय दिन ७ तो उदर को सब रोग जाय कुमारी संग से खाय दिन ७ तो रक्तवात जाय। रुद्रवंती से खाय तो सब प्रमेह जाय गोमूत्र से पीवै तो कास स्वास जाय हरदी मधु संग खाय तो मूत्रकृच्छ जाय जवाखार से खाइ तो पथरी मिटै क्रोध मिटै इति विश्वेश्वर ताबा को अनोपान ॥

अथ अन्य ताबा की विधि कुष्ठे तांबा टंक बेध पत्र के तेहि के सम पारा दूनी गंधक लै खलै तुलसी के दल संग खलै फेरि अंब रा के रस में फेरि मदार के पत्र के रस में फिरि लहचिचरा से फेरि कां जी से फेरि जंभीरी के रस की पुट १६ फेरि सोनामाखी की पुट १ फेरि खलै सो पत्र लै हांडी में धरै चूना गुर सानि के कपरौटी करै ७ सूखै दिन २ फेरि आंच देइ पहर ३२ फेरि स्वांग सीतल लेइ फेरि तूर्जा स विष लेउ और भस्म कै अठगुन मिर्च लेव और छिउल के बीज जर के रस और गूदा लै खलै दिन ३ तब सिद्धः अनोपान में खाय रत्ती १ तो कुष्ठ जाय पथ्य चना की रोटी परहेज दुष्ट बीज अथ

वंगसेनी वटी अफीम अकरकरहा कुचिला मिर्च सम भाग लै घिउकुआर के रस में खलै पहर वटी बांधै रत्ती प्रमाण सो खाइ तो अफर वाइ कफ खांसी कमर पीर ज्वर संग्रहणी सर्व रोग जाय लौंग हर्रै कमलगट्टा अबरा इलाइची सम लै चूर्ण कै मधु संग खाय तो अबरा रक्त मिटै इति आंव रक्ते॥ अथ

हरताल बिधिः ताब की हरताल १० भेंडी का दूध बिजौरा का रस थूहर का दूध कुमारी का रस धतूर का रंग सब में सात सात भावना दै कै फेरि कोसा में धरि कै कपरौटी करै गुर चूना सानि के अच्छे फेरि सूखै छांह नीके फेरि छिउल की खार लै हांडी में भरै वीचे संपुट धै फेरि भरि कै मुख भरि पर्दई सेबन्द कै चूना गुर से छा पि लेइ बड़ा कुंड खोदि कंडा भरि हांडी धरि बन्द कै आंच देइ

निरंतर रक्षा करै पहर ८ संग शीत होय तो लेव ॥ अथ तस्यानु
तो पान गुणम् ॥ शकर कुरा से खाय तो रक्त विकार जाय मधु
से खाय तो सेत कुष्ट जाय २ सेमर के रस सें खाय तो गज कुष्ट जाय
३ तुलसी दल रस तें खाय तो खरा कुष्ट जाय ४ तीसी के तेल में खाय
तो वात पित्त जाय ५ निम्बू के रस में खाय तो दुष्ट कुष्ट जाय ६ ह
रदी बूकि मिले खाय तो कृमि जाय ७ मधु से खाय तो अंतर व्या
धि जाय ८ गो मूत्र संग खाय तो अंग पुष्ट होय ९ कांजी से खाय
तो कमल बाइ जाय १० गेहू से खाय तो राज कुष्ट जाय ११ गो दु
ग्ध से खाय तो कुष्ट मरहे १२ गो घृत से खाय तो नामर्द पुरुषार्थ
पावै १३ करेला से खाय तो वृद्धो पित खणायते १४ तिल के तेल से
पीवै तो वात कुष्ट जाय १५ अदरख लै खाय तो वात पित्त जाय १६
कुटकी से खाय तो स्थंभन होय १७ गरम जल से पीवै तो देह कै
हड फूटन मिटै १८ शीतल जल से पीवै तो श्लेष्मा जाय १९ कु
श की जर सो पीसि पीवै तो तिजारी जाय २० मधु में पीवै दिन
२४ तो मंदाग्नि जाय २१ गौ के माठा में पीवै दिन २४ तो सफेद
और पीत प्रमेह जाय २२ पीपर छाल सें पीवै दिन ७ तो रक्त पी
ती जाय तो काकोदर मिटै २४ कंकूदनि से खाय दिन ६० तो अ
जीत बाग जाय २५ अजा मूत्र सों पीवै तो सर्व बिष को दोष मिटै
२६ गज के मूत्र में पीवै तो सकसकी जाय २७ गो घृत में खाय
तो बाई जाय २८ जीरा सों खाय तो रक्त पित्त जाय ३० कंद से
पीवै तो सन्निपात जाय ३१ भंगरा के रस में खाय तो पांडुरोग
जाय ३२ सेत मुसरी कंद से खाय तो रस कुष्ट जाय ३३ अजा दु
ग्ध में पीवै तो पाल कुष्ट जाय ३४ त्रिफला से खाय तो रक्त स्राव मि
टै ३५ सेंधो से खाय तो भूख बढै ३६ जेती औषधि कही विचार
चाउर द्वै सब में हरतार ॥ रोटी एक चना की भखै। खारा खट्टा
आंखि न लखै ॥ इति हरताल ॥ अथ सन्निपात चिकित्सा
कुंकुम लौंग चिरायता शकरकरा पीपर सम लै आदी के रस में

पीसि खाय तो सन्निपात जाय उन्माद कफ तंद्रा वाई कास शील शूल भ्रम मोह ज्वर एन हैं **अथ सन्निपात को अंजन** ॥ कूट त्रिफला हींग वच सेंधो कुटकी पिपरा सरसों सिरसा बीज सम लै अजामूत्र सों पीसि कै नेत्र में अंजन करै तो मृगी उन्माद भ्रम सन्निपात तिमिर रतौंधी भूत दोष सिरोवर्ति एसब मिटैं **अथ सन्निपात को नाश** सरसों सेंधो कूट स्वेत मरिच सम लै अजा मूत्र में पीसि नाश देइ तो तंद्रक सन्निपात जाय **अथ अतीसार लेप** आम की गुठली कायफल अफीम इइजव जल सों पीसि नाभी में लेपै तो अतीसार मिटै **अथ ववेशी चिकित्सा** । तिल माखन खाय तो रक्त ववेशी जाय **अन्य** नागकेसर मिसरी माखन खाय तो रक्त ववेशी जाय **अथ धूनी** गैंडा की खाल का धुआं लेइ गुदा में दिन ७ तो ववेशी जाय **अथ भगन्दर चिकित्सा** रती हरर अवरा जल में पीसि प्रात हि लेपन करै तो भगन्दर जाय **अन्य** बिलारी का हाड़ त्रिफला के रस में घसि योनि में लेपै तो भगन्दर जाय **अन्य** चमेली पत्र सेंधो सोंठ गिलोइ जल से पीसि योनि में लेपै तो भगन्दर मिटै **अन्य** रसकपूर हरैं मिर्च इलाइची खाय पथ्य दूध भात करै दिन ३ तो भगन्दर जाय **अथ गुल्म रोग** अजमोदा सेंधो पीपर सोंचर हर वायभिरंग अमलोनाजवारवार हींग भूजी सब चूर्ण कै घृत में खाय तो शूल विसूचिका ववासीर अजीर्ण जाय **अन्य** चाऊर टंक ३ सेहुड के दूध में भिजै चूर्ण कै घृत संग खाय प्रात गरम जल संग तो उदर सब रोग मिटैं **अथ प्लीहा रोग** सरफोका की जर छाछ में पीसि पीवै तो प्लीहा मिटै **अथ शूल रोग** सोंठ पुष्करमूल हींग भूजि कै चूर्ण कै गरम जल में पीवै तो शूल अफरा गुल्म जाय **अथ छर्दि रोग** मदार के फूल लौंग सम लै पीसि गोली कै खाय प्रात तो छर्दि मिटै **अन्य** त्रिफला सोंठ बिडंग मिर्च पपरी खैर मोथा पिपरामूल लौंग देवदारू

नज लाडु की पद्माख पन्नज नागकेसर सम लै दूनी मिश्री
मैदा कै खाय तो छर्दि मिटै ॥ अथ मृगी रोग गुहकर मूल चि
रायता ब्राह्मी सोंठ कचूर दारुहरदी देवदारु वच मोथा पिप
रामूल वच खुरासानी अजवाइन चूर्ण कै मधु संग खाय पीछे दूध भा
त खाय तो मृगी जाय ॥ अथ स्वेत कुष्ट हरताल भाग १ वकुची
भाग ४ गोरोचन १ गोमूत्र सों पीसि लेपै दिन ३१ तो स्वेत कुष्ट जा
य गुंजा नीम पत्र कूट वच चीत सम लै कांजी से पीसि लेपै तो
स्वेत कुष्ट मिटै ॥ अन्य मैनसिल चीत वच वकुची वंग कांजी से
पीसि लेपै तो स्वेत कुष्ट मिटै ॥ अन्य खैर अवरा सम लै काढा
कै वच कै चूर्ण कै टंक २ मिलै कै पीवै तो स्वेत दाग तन के मिटैं
अथ खाज हरदी अवरा वच वकुची नीम पत्र टंक २ गोमूत्र
सों पीसि पीवै तो कंडू जाय ॥ अन्य गंधक चूक विडंग सिंगरफ
कूट हरद पवार बीज सिंदूर सम पीसि धतूर नीम पान इन के
रस में लेपै तो खाज दाद विचर्चिका जाय ॥ अन्य दूब हरद स
म पीसि कै जल सों लेपै तो दाद खाज मिटै ॥ अथ लूता रोग
चंदन कूट संभालू पात कमल सरिवन जल में पीसि लेपै तो लू
ता मिटै ॥ अथ नहारू रोग सीपी अधजरी कै दही में पीवै
तो नहरुआ जाय ॥ अथ शस्त्र घाव काकजंघा की जड़ पीसि घा
व में लगावै तो पीड़ा रक्त प्रवाह मिटै पूरै ॥ अथ वायु चिकि-
त्सा पीपर चीत असगंध वायभिरंग जवाइन सोंठ मगरैल
पीपर मूल अकरकरा सम लै दूने गुड में गोली करै टंक २ प्रमा
ण मात खाय १ तो वाई चौरासी छूटैं ॥ अन्य सोंठ टंक ४ मिरच
टंक ४ सोहागा टंक ३ विष टंक १ आदी रस में गोली करै गुंजा
सम सो खाय तो शीत मिटै वायु मिटै सत्य मिटै ॥ अथ तैल म
वायु रोग मीठा तेल १ धतूर का रस १ धतूर बीज टंक ५ विष
टंक ५ गुंजा टंक ५ सब यत्न से तेल में पचावै तो सिद्ध होय ल
घु विषगर्भ तेल जो लावै तो चौरासी वायु जाय ॥ इति लघु

विषगर्भतैलम्॥ अन्य हलसून कूटि के गो दुग्ध में खौ
वा के खाय तो वात शीत हड़ फूटन देह की जकड़न मिटै अथ
गंडमाला माल कंगनी रासन देवदारू असगंध गिलोइ
सोंठ कचूर सोंठ सतावरि जवाइन नींब भंगरा केस से सम
औषधि लै पीसे सब की तुल्य गूगुल ले अर्धभाग घिउ लै गोलि
ली करै टंक २ गरम जल मद दूध इनके संग खाय तो सर्व संधि
गत वायु गंडमाला मिटै अथ पित्तदाह इलाइची कचूर
खस अवरा चंदन सम लै जल सों पीसि पीवै तो पित्त दाह मिटै
अन्य घृत धोवै१०० सो लेपै पांव में तो शीतल होय अथ दंत
रोग कीट रक्त श्राव पीड़ा यां रूसा मोथा खैर दूधिया
कुटकी लोध मजीठ सम ले पीसि खाय तो दंत कीट रक्त श्राव
पीडा मिटै चिकनी सुपारी वदाम का छिकला का कोइला व
बूर का गोंद रूमी मस्तगी माजूफल थोरा भूजि के मैदा के
मंजन करै गो दंत वत होय अथ मुख पाक की औषधि
त्रिफला दाख गिलोइ चमेली पत्र दारुहरदी पाढ़ी सम लै पी
सि कै गरम कै मुख मे लेपै तो मुख की पीड़ा मिटै अन्य सर
सों सेंधो लोध वच सम लै पीसि जल मे मुख मे लेपै मुख की
किलास मिटै अथ झाईं की औषधि करौला तिल जीरा
सरसों पिपरा सम लै जल सों पीसि मुख में लेपै तो झाईं मिटै
अन्य सेंधो हरद कूठ लोध सोंफ सम लै मैदा कर कै पत्रके रस
ते पीसि लेपै तो झाई मिटै अथ नासा रोग दूब के फूल हरी
तकी अनार के फूल सब पीसि रंग निचोय नास लेइ तो नासा
की रक्त श्राव मिटै अन्य पीनस सोंठ मिर्च पीपर गुड़ में से
वन करै तो नासा के सर्व रोग जांय अन्य मिर्च २ बंदाल के
बीज २ पानी में पीसि नास लेइ तो पीनस मिटै अथ नेत्ररो
ग सींगी मछरी का सिर जराय के राख लेइ लोंग फटकरी गोघृत
से अंजन करै लगावै तो वम्हनी मिटै अथ नेत्र अंजन रसवत

सेंधा हरैं गेरू हरद जल से पीसि ऊपर लेपै नयन पीर मिटै अन्य फिटकरी भूजी रसवत नारी का दूध कांस की थालीपर अंजन करै सो नेत्र में लगावै अंजन तो पीड़ा मिटै अन्य अंजन तिमिर को सुरमा सेंधो संख मैनसिल त्रिकुट कायफर मिश्री जल से अंजन कै लगावै तो तिमिर फूली माड़ा मिटै अथ कर्ण रोग देवदारू वच सोंठ सेंधो सौंफ इलाइची सब अजा मूत्र सों पीसि गरम कै कान में डारै तो पीड़ा मिटै अन्य सेंधो अजा मूत्र में गरम कै कान में डारै तो शूल कर्ण शब्द गूजी मिटै अथ शिरो रोग देवदारू कूट कायफर रेंडी का तेल कांजी से लेपै तो शिर की पीड़ा जाय अन्य रेडजर रासन कूट छोटी वच मोथा जल से पीसि गरम के लेपै तो शिर विथा मिटै अन्य चंदन हर्रा कसेरू दूब उसीर अंवरा कमल बीज हौहूबेर जल में पीसि लेपै तो पित शिर मूल मिटै अन्य कूट मिर्च कायफर रेंडी की जर जल से पीसि गरम कै लेपै तो मूर्च्छावर्त मिटै अथ अर्द्ध कपारी की औषधि कूट पीपर धनिया वच जेठी मधु कांजी ते पीसि लेपै तो आधा सीसी मिटै अन्य सेंधो घृत सों पीसि कै प्रातै नास लेइ तो आधा सीसी मिटै अथ अतीसार मिर्च रूमी मस्तगी दाडिम कली वंसलोचन आम की गुठली लोध मुलेठी धवई के फूल माजूफर सोंचर कूट जायफल कुंजी के फूल ये सम लेइ कथ्था २ भाग पिस्ता दूइ दूजव मोचरस भाग ४ पीसि पोस्ता जल सों गोली करै टंक १ सो तंदुल जल सों पीवै पथ्य माठा भात खाय अतीसार मिटै सत्य मिदं ॥ इति लीलावती वटी ॥ अथ पाचनम् विरिया लोन चूक जवाइन जीरा दूनो हरैं त्रिकुट चीत हींग भूजी अंवरा अजमोदा वायभिरंग धनिया अमिली सम भाग ले मैदा कै अमिलवेत के रस में भावना दे २७ फेरि खाय तो मंदाग्नि व्यथा मिटै भूख प्रबल बढ़ै अथ कर्ण रोग समंदुर फेन

कूट पत्रर हींग ताम्बूल घोंघा का मांस सोंठ छोटेबेल की गूदी वच लहसुन सब लै क रू तेल में पचर्दसो कान मेंडारै चहला होय कृमि परे होंय सो सब दुख मिटै अथ कुष्ट कुठार: विषटंक ५ पाराटक ५ गंधक टंक ५ हरताल टंक ५ भेलावाँ टंक ५ भंगरा टंक ५ अमिली की चिपरी का खार टंक ५ सब लै खरिल करै पहर १ फेरि रूस सर्प के पेट में फारि के भरै सो सर्प लै हांडी में भरै फेरि गोदुग्ध भरि मुख बन्द करै वज्र सम लेपै फेरि चूल्हे पर धरि आंच देइ पहर ८ प्रथम दीपाग्नि फेरि यथा क्रम वढावै अग्नि पहर ८ पर्य्यंत फेरि स्वांग शीत लेइ सो रस खाय पान में रत्ती १ तो अठारह कुष्ठ मिटै धुन मिटम अथ मुख दंत रोग माजूफल सोना माखी लोह चून खैर मैदा के मधु संग दंत मंजन करै तो रक्त श्रव दंत विथा मिटै अथ वस्त्र शुद्धि: घृत का दाग कांजी से मिटै तेल का दूध से मसि का दही से पान का गुड़ से खैर का दाग कैथा के धोये से मिटै अथ बंध्या प्रयोग: व्यास ऋषि सों यक्षिनी प्रश्न किया कि भो स्वामिन् स्त्रिन कू गर्भ नाहीं रहत है सो का भेद है ऋषि बोले कि स्त्रिन के सप्त दोष होत हैं ताते गर्भ नहीं रहता यक्षिनी बोली कि भो स्वामिन वे सात दोष कौन हैं जिन ते नारी बंध्या होती है व्यास बोले कि प्रथम दोष तो छोटी स्त्री को बड़ा पुरुष भोग करै तो फूल जरि जाता है गर्भ नाहीं रहता १ फेरि स्त्री के फूल में पवन पैठी होय तो गर्भ न रहै २ फेरि स्त्री के फूल में मांस वृद्धि होय तो गर्भ न रहै ३ फेरि स्त्री के फूल में अग्नि परी होय तो गर्भ न रहै ४ जो स्त्री के फूल में शीतला होय तो गर्भ न रहै ५ स्त्री के फूल में छाया होय तो गर्भ न रहै ६ जो स्त्री के फूल में कीट वैठा होय तो गर्भ न रहै ७ जो स्त्री के फूल में भूत चुरैल होय तो गर्भ न रहै ८ फेरि यक्षिनी बोली हे स्वामिन ये दोष कैसे मिटैं व्यास बोले स्त्री रजस्वला होय तो स्नान के दिन भोग करै भोग उपरांत पूछै

स्त्री ते कि हे प्रिये तुम्हारा कौन अंग दुखता है जो कहै कि माथा दुखता है तो जानै कि फूल जरिवा है १ ताकी औषधि ॥ समुद्र फल सेंधो लहसुन ये तीनों सम लै पीसि फाहा बनाय गाभ में राखै दिन ३ चौथे दिन स्नान करै पुरुष भोग ते गर्भ रहै जो कहै अंग कांपता है तो जानै कि फूल में पवन भरा है ॥ ताकी औषधि ॥ हींग टंक १ तिल के तेल सों मिलै के रुई का फाहा बनाय भग में राखै दिन ३ चौथे दिन स्नान करै पुरुष संभोग ते गर्भ रहै ३ जो कहै कि कमर दूखती है तो जानै कि फूल में मांस बढ़ा है ॥ ताकी औषधि ॥ स्याम जीरा हाथी का नख रेंडी का तेल मिलै पीसि सो रुई में कै भग में राखै दिन ३ चौथे दिन स्नान करै पुरुष संयोग ते गर्भ रहै ४ जो कहै कि सब सरीर दूखै है तो जानै कि फूल में अग्नि परी है ॥ ताकी औषधि ॥ सेवती के फूल का रस तिल के तेल में मिलै रुई में बोरि भग में राखै दिन ३ चौथे दिन स्नान करै पुरुष संयोग ते गर्भ रहै ५ जो कहै कि पिंडुरी दूखत है तो जानिये कि फूल में कीड़ा लगा है ॥ ताकी औषधि ॥ हर्रा बहेरा कायफल राई पीसि बटी कै सब साबुन के पानी से फाहा कै बटी लपेट भग में राखै दिन ३ चौथे दिन स्नान करै पुरुष संयोग ते गर्भ रहै ६ जो पेट दूखता है तो जानै कि फूल में शीतलाई परी है ॥ ताकी औषधि ॥ वच जीरा असगंध तीनौ सुहागा के पानी से पीसि के फाहा कै भग में राखै दिन ३ चौथे दिन स्नान करै पुरुष संयोग ते गर्भ रहै ७ जो पेड़ू दूखता होय तो जानै कि फूल में जल अड़ गया है ॥ ताकी औषधि ॥ कस्तूरी मासे १ केसर मासे १ ताकी गोली बनावे ४ भग में राखै दिन ३ चौथे दिन स्नान करै पुरुष संयोग से गर्भ रहै ८ जो आंख दूखती होय तो जानै कि फूल में जाला छाया है ताकी औषधि ॥ अंबरा बहेरा मधु से गोली कै भग में राखै दिन ३ चौथे स्नान कै पुरुष संयोग

तेगर्भ रहै ६ जो कछु न पीड़ा करै तो जानै कि भूतदोख है ता
की औषधि नहीं है जंत्र मंत्र देव पूजन प्रसिद्ध है अथ परीक्षा
स्त्री पुरुष के मूत्र में चना जमावै जाके मूत्र में चना जामै नहीं ता
को वंध्या कहिये ॥ इति वंध्या विधि समाप्तः ॥ अथ पुष्ट
वीर्य की औषधि बबूर का गोंद ५ वाके दूध में भिजो रखै
दिन ३ तब कूटि के बुकनी करै और असली की बुकनी ५ ईसब-
गोल की मैदा ५ कलमी तज की मैदा ५ चीनी १ सब मिलै के गा
दुग्ध संग चूर्ण २५ पीवै तो छिप्र मिटै पुष्ट होय अन्य गोहूं का सत्त गुर्चे का सत्त बबु
र का गोंद खांड घिउ १ गरी चिरौंजी बदाम छुहारा २ मिर्च २ पाग कै खाय १ धातु
बंद होय वृद्धि होय अन्य स्याह मूसली का तेल निकालकर बंगला पान में १२
तो खाय तो बल पुष्ट होय अन्य गेहूं की मैदा स्वेत मूसली मैदा कै घी में मिलै मधु में तर
करै घृत पात्र में धरै रात्री में खाय १२ तो पुष्ट होय नासूर की
औषधि चसुर भेड़ी के घी में खरिल करै पहर १ सो फाहा देइ
नीक होय अथ अंजन मुरदासंख २५ नीम की पत्ती के रस
में हांडी में चूल्हे पर धरि के आंच देइ सो धै फेरि जब रस जरै तब
लैकै कंडा मैं भसम करै संपुट कै सो भसम कै अंजन करै सो नेत्र में देइ
तो गरमी की विथा तिमिर जरलि नेत्र की मिटै ॥ दोहा ॥ विस्वा
पुष्पवती तिया कुलटा संगे भोग । उच्छिष्ट संग पे सब ह्वै होत
फिरंगी रोग ॥ अथ फिरंगी वाव की औषधि कुटकी ६
पित पापरा ६ चिरायता १२ सफेद चंदन ६ सब चूर्ण कै भिजै
राखै प्रातै मलि पीवै दिन ४० तो अच्छा होय अथ पुष्ट ई
सालिम १ गुखरू २५ गुरखुल छोटा २५ कलमी तज
गोंद बबूर का १ मूसली स्वेत ४ चुनिया गोंद १ धौ का गोंद रू
मी मस्तगी १ असगंध नागौरी २ तालमखाना २ सब चूर्ण कै
दूनी चीनी डारि खाय १२ दूध संग पीवै तो पुष्ट बहुत होय ॥
अथ बालक के ज्वर होय पेट फूलै पीरा करै ता
की औषधि वर्ष ते ऊपर सात वर्ष लौं होय तो अमिलतास ३

मरोरफली ३ सौंफ ३ हर्रा केवीज ३ इंद्रजव ३ मुरदासंख रत्ती १ काढ़ा करै सो रहके ग्रा २५ जल में जब २५ पैसाभर रहै तब पिवावै आराम होय अन्य बालक बर्ष ७ ते दश तक होय ताकी दवा ज्वर होय कापरी लगी रहै हरै रत्ती १ मुरदासंख रत्ती १ अदरक गूदी रत्ती १ सौंचर रत्ती १ लौंग रत्ती १ मिर्च रत्ती १ इलाइची रत्ती १ सब पीसि के पुरानि आमेवल का बनाय के देइ तो अच्छा होय अथ पित्त ज्वर की औषधि वंसलोचन ६ इलाइची गुजराती ६ हर्रे ६ जेठी मधु ६ सौंफ ६ पुदीना ६ मिसरी ६ सब जल में पीसि पीवै अच्छा होय

अथ बात कफ ते पेट पीरा करे ताकी औषधि । लोन ५ त्रिफला त्रिकुट बच हरी कुरकी देवदारू अजमोदा लौंग जीरा २ चौकिया सुहागा बायबिरंग हींग की जड़ सम भाग लै चूर्ण के तिह की दूनी सेहुड़ की भस्म मिले खाय ६ अ पूर ले गरम जल पीवै पेट पीर मिटै अथ बातसे गांठ दू खै पुराना दिया अग्नि में तप्त के थाली में घै औषधि पीसि के दिया में डारे सो बलका की होय कमर दरवै और कोला भरा होय ताकी औषधि सोंठ ६ लहसुन ६ बबई के पंचांग ६ मोथा ६ सब काढ़ा अष्टावशेष पीवै तो अच्छा होय अथ तेल म कोला भरे तेल गरी का ५ अफीम टंक १ नि र्चे २ बैतरा २ पीपर २ अकरकरा २ सब चूर्ण के तेल में पचा वै सो तेल अंग में लगावै तो कोला बाई जाय अथ कफ हर्रै ६ मोथा ६ बेरी के पत्र ६ बेसाखी हरी ६ पिपरामूल ६ भ टकटैया की जड़ ६ अष्टावशेष काढ़ा के पीवै तो कफ जाय

अथ पुष्ट का सर्द चूर्ण धातु वृद्धि को अवरा पुराना आम की गुठली पुरानी कमल गट्टा ५ गुर्च का सत्त १ बरिआ री की जड़ १ ताल मखाना १ तज कलमी १ बबुर का गोंद २ तीखुर १ असगंध १ मूसली दूनो २ रूमीमस्तगी २ बैतरा २

के बांच के बीज १ सब चूर्ण कै दूनी चीनी डारि खाय १२ ऊपर ते दूध पीवै तो अतिपुष्ट होय अथ पेट झरै ता के बंद करने का काय बेल की गूदो ६ धनिया ६ मोथा ६ सुगंधवाला ६ गुर्च ६ सौंफ ६ काढ़ा अष्टावशेष करि पीवै तो दस्त बन्द होय अथ इन्द्रीजुल्लाब रेवन्दचीनी ६ कलमीशोरा ६ अवरा पुराना ६ जीरा ६ जेठी मधु ६ सब मैदा कै खाय ऊपर दूध पीवै दूध १ पानी २ मिलै चूर्ण खाबै जाय दूध पियै जाय अथ जूड़ी अतरा तिजारी की औषधि पर्वर के पत्र ६ इन्द्रजव ६ देवदारु ६ त्रिफला १८ मोथा ६ अमिलतास ६ जेठी मधु ६ गुर्च ६ रूसे के पत्ता ६ सब काढ़ा अष्टावशेष कै पीवै अच्छा होय अथ जूड़ी की औषधि भटकटैया की जड़ १२ धनिया १२ बैतरा १२ देवदारु १२ अष्टावशेष कै पीवै जूड़ी जाय अथ सबै बातै कनक गर्भा सोंठ बटी धतूरके फल ८ बैतरा सोंठ ४ जवाइन ४ वस्त्र में पोटरी कै घड़ा में फल भरै तब सोंठ धरै फेरि जवाइन धरै फेरि फल धरि जल भरि मुख मूंद के चुरवै पहर दुइ फेरि उतारि के सोंठ लैले और फेंक दे सो बैतरा छाहे सुखवै तब सहिंजन के रस में गोली बांधै चना सम सो खाब नीक होय ध्रुवमिदम् अथ कासस्वासादौ रूसे के पत्ता की खार भटकटैया के पञ्चांग की खार लहचिचरा की खार तमाखू के डंठल की खार ये सब लै एक घड़ा पानी में चुवावै बेरकुसुभ की तरह कराही में डारि खौवा करे जब रस की तुल्य होय सो चाउर भरि बंगला पान में खाय तो खांसी दमा नीक होय अथ धाई पाक घोड़ी छेरी का दूध १ में भिजोवै तब मिर्च २५ इलाइची गुजराती २५ लौंग २५ जायफर २५ पीपर २५ सालिम २५ बंसलोचन २५ रूमी मस्तगी २५ कमरजोर २५ असगंध २५ तालमखाना २५ बीज बन्द २५ सनावर २५ तज कलमी २५ मूसली स्वेत २५ मोचरस

२५ चुनिया गोंद २५ बबुर का गोंद २५ मैदा २५ नागकेसर २५ मलैचंदन २५ स्याहजीरा २५ बदाम ॥= छुहारा ॥ चिरौंजी ॥ ७ गरी ॥- कपूर ३ समके दूनी चीनी घृत ॥ भाके के खाय पांच पैसा भर तो अति पुष्ट होय अथ प्रसूत रोग धतूरे के फल की पींटी ॥ अदरक की पीठी ॥ तेल तिल ॥ तेहि मां पचावै सो तेल लगावै प्रसूत मिटै इति हेमसुरलो दशमूल का काढ़ा पीवै प्रसूत मिटै अथ शूल हींग सेंधो गोमूत्र में पीसि तिल के तेल में पचावै सो नाभी में लेपै सूल मिटै अथ पक्षी पकड़ने की बिधि मुर्स सब आटा में सानि के खवावै बेबचर होय तब पकड़ लेइ अथ मिरगी की चिकित्सा मूसे का किरवा बटोरि के लिलावै तो नीक होय अन्य जेहि जेवरी से चोर बांधा रांगा जाय सो जेवरी ले हांडी में भरि मुंह बन्द कै कपरौटी करि फूकै सो भस्म जल में पिआवै अच्छा होय अथ बीछी मारने की दवा मुर्दार घसि के लगावै तो बीछी उतरै अथ लड़का होने में बिलंब होय पीड़ा करै ता की औषधि ब्राह्मी पीसि हाथ पांव में लेप करै तो प्रसौ होउ जो लरिका मुवा होय अन्य पाटी चिचिन्हा पीसि नाभी में लेपै औ जलदी छोड़ाय लेइ तो जलदी लड़का होय अन्य बरियारी की जड़ खोदै उत्तर मुख होय कै सो लावै पीसि नाभी में लेपै माथे बांधै जलदी प्रसव होय अथ बमन बिधि बच टंक सवा १ सेंधो टंक १ मधु सों घोरि खाय बमन होय अन्य मैनफल दूध में औटै जमावै मथि नैनू काढ़ि खाय तो बमन होय अथ श्वास निवारण बिधि सरफोंका की जड़ उत्तर मुख होय के लाय लेइ फेरि उत्तर मुख मुंह में राखि मग में जाय जब लो बोलै तब लौ धावन लागै अथ मुमूर का गुण मधु सों खाय तो स्त्री प्रदर मिटै जंभीरी के रस में खाय तो निर्जारी जाय मधु में पीसि लगावै तो दाद जाय अथ विष करे की औषधि हुरहुर के बीज पीसि पीवै तो

माहुर फुरै अन्य फटकरी पीसि पीवै तो बिष मिरै स्थावर जं गम रोगो सत्य अथ घुमनी त्रिकुटमूगी को छत में भूजि गुड़ में गोली बांधे सो खाय दिन ७ घुमनी मिटै अथ अंतरा जूड़ी की औषधि चिवि बिल की पाती औ दाय सांभर खावै तो अंतरा न रहै अथ सिड़ी कुत्ता काटै कूट रंक ४ मध्य बघेप काढ़ा कै पिवावै तो नीक होय अथ गोजर बिष अगरार के घत गरम कै बांधै नीक होय अथ बीछी लहसुन मदार के दूध में घसि लगावै नीक होय अथ कखरी गंध की औषधि फटकरी मदार सखपी सि लगावै गंध मिटै अथ पुष्ट की औषधि हैं अवरा सोंठ जेठी मधु परास के बीज घृत मधु सानि खाय तो नपुंसक पुरुषार्थ पावै अथ पथरी की औषधि कंजा की गूदी मधु दूध से पीवै दिन ७ पथरी मिटै अथ पारा मारण बिधि पारा हुरहुर के रस में खरल करै फेरि संपुट दै गजपुट आंच देइ पारा मरै अथ सोना माखी गुण जो खाय मास १ सोना माखी तो युवा सम सदा रहै जो चालीस दिन खाय तो अंग कस्तूरी सम सुगंध होय अथ केश बृद्धि अवरा नेबू के रस में पीसि लगावै तो बाल बढ़ै अथ मुख सुगंध की औषधि तज इलाइची नष जावत्री नागकेसरि जल सों पीसि बरी बांधै रत्ती १ पान में खाय दिन ७ तो मुख सुगंध होय अथ मूड़ पीड़ा की । सोंठ गुड़ मिले सूंघत रहै नीक होय अथ प्रदर रोग सुगंध बाला नागकेसरि तवाखीर धेला धेला भरि लै चौरहन से पीसि पीवै प्रदर मिटै अथ फिरंग बात की औषधि फटकरी सुहागा १२ तूतिया ३ ईंगुर १६ कौड़ी २ जारि कै कागदी के रस नें गोली करै मटर सम सो प्रात खाय गोली १ आराम होय अथ हैजा की औषधि हैं २५ [illegible] नमिलवन २५ सोंफ २५ जीरा २५ पुदीना २५ मोचरस २५ मिर्च २५ नमक मिलाय चूरण खाय

जामुन कीपाती घसिके ओही रस में पीवै तो इसका मिटै अन्य सोराकुचाना २५ अफीम ६ मिलै के गोली करै ४ सो एक गोलीदेइ और जब पियास लगै तो चिउनापुराना भिजै कै मिलै पानी पियावै जो गिर परै तो फिर देइ नीक होय॥ अथ हुचकी की सिद्धि औषधि कस्तूरी रत्ती १ जावित्री मासे ६ गुजराती इलाइची के वीज ६ पीपर ६ मधु से पीसै गोली रत्ती समजल सों बांधै १ गोली खाय तो कैसिउ हुचकी होय सो बन्द होय अथ हुतासन रस सर्वज्वरे विषमासे ५ ऐनरा २५ सोहागा २५ मिर्च मासे ८ कौडी का चूना २५ सव लै खरिल करै पहर १ सो खाय पानमें रत्ती १ तो शीतज्वर विषम मिटै अथ त्रिपुरभैरव रसः विष मासे १ सोंठ मासे २ पीपर मासे ३ मिर्च मासे ४ तांबा की भस्म मासे ५ सिंगरफ की भस्म मासे ६ सब खरिल करै पहर १ खाय रत्ती १ पान में तो बात श्लेष्म ज्वर जंघा पार्श्व शूल पीनस स्वासवधिर ज्वर सव मिटै सत्य मिस्म अथ लडका होने में देर होय दुख होय ता की औषधि चिचड़ा की जड़ पीसिके पांदरी बांधै तो जलदी होय अन्य वरियारी की जड़ जब न उतरगै होय सो लै पीसि वोडरी लावै तो जलदी लडका होय अथ नपुंसक की औषधि हरैं अवरा सोंठ जेठीमधु पलास बीज सब दमरी दमरी भर लै चूर्ण कै मधु घृत सानि कै खाय दिन ३२ तो नपुंसक पुरुषार्थ पावै अथ रूई गिरावै की औषधि लहसुन २५ राई २५ अंकोल के जड की छाल २५ भंगरा की राख २५ सव के सम गुड़ पुराना मिलैं के गोली बांधै ३ खाय गोली १ ऊपर ते छेरी का दूध पीवै तो रूई गिर पडै तो धर्म करै अच्छा होय अथ गोला कटि शूल गाढ़ पीड़ा का काढ़ा सोंठ ६ लहसुन ६ बवई की जड़ ६ जौ पर्च ६ नागरमोथा ६ अष्टावशेष काढ़ा

कै पीवै तो अच्छा होय अथ फोड़ा की औषधि लीलाथोथा साजीखार जवाखार सुहागा सम पीसि पाके ऊपर लगावै तब मोम की टिकिया करि गरम कै बांधि देइ अन्य संख कौड़ी का चूना गुड़ घोरि के लेप करै तब कड़ू तेल लगाय के सेंदुर बुरकाय देइ तो पका हुआ अच्छा होय अथ बवासीर औषधि बंदाल पंचांग भांग तितरैंउं तरोई बबुर का फौंफ़ नाहांडी में भरि के आग दै औषधि का चूर्ण डारि डारि धूनी लेइ कपड़ा ओढ के दिन ७ पथ्य दही भात खाय चूर्ण को सोंठ के जल से गोला करि बेरीप्रमाण खाय प्रात १ मध्यान्ह १ सांझ के पथ्य दही भात करै दिन ११ तो गुदा के कृमि गिरैं बवासीर आराम होय अथ मृगी की औषधि छेरी के दूध की नास लेइ दिन ७ नीक होय अन्य गोदुग्ध कद्दू के मद मिले के नास लेय दिन ७ नीक होय अथ कफ ते खांसी आवै ताकी औषधि पुहकरमूल भरकटैया की जड़ त्रिकटु त्रिफला भारंगी काकरा भृंगी जटामासी लोन पांचौ समभाग ले मेदा कै खाय ६१ ऊपर नेगरम जल पीवै खासी मिटै अथ अन्न न पचै तो जवाखार सोंठ सम ले चूर्ण कै घृत में चाटै ९० भूख लागै अथ सिंगरफ सोधन विधि सिंगरफ केला के पानी से खरल करै पहर १ टिकरी बांधै गजपुट आंच देइ सिद्ध होय अन्य जामुन के फल के रस मे भिगोवै कराही में धरि आंच देइ जब भस्म समहो य सुद्ध होय अथ अभ्रक सुद्धि: कृष्णाभ्रक लै ८ अग्नि में तप्त कै बुझावै चाउर का कन जल में घोरि के तामें वा छीर में फिर चूर्ण कै त्रिफला के काढा में खरल करै पहर १ टिकरी सुखवै तब गजपुट आंच देइ स्वांगसीतल ले नकछिकनी के रस में खरल करै पहर १ फेरि गजपुट देइ फेरि अर्क के दुग्ध में मद्य सुखै के टिकरी अर्क पत्र मे टिकरी लपेटि के पुट ७ देइ जरा काय ते मध्ये पुट ३ फरि भस्म सम घृत लै कराही में चढाय आंच देइ जब घृ

जरै तब भस्म सब योग्य है अथ चूर्ण सर्व रोगे रेवन्तची नी टंक ५ सोनामाखी टंक ५ जटामासी टंक २ खेत चंदन टंक २ देवदारु टंक २ दारुहरदी टंक २ रक्त चंदन टंक २ सोंठ टंक २ मिर्च टंक २ पीपर टंक २ त्रिफला टंक २ सौंफ टंक २ जीरा टंक २ धनिया टंक २ वायबिरंग टंक २ खुरासानी जवाइन टंक २ वच टंक १ तज टंक १ पत्रज टंक २ लौंग टंक २ दालचीनी टंक २ स्याहजीरा टंक २ गुजराती इलाइची टंक २ मिश्री ३ सब चूर्ण कै खाय मासे ५ सायं प्रात तो मल दोष वात पित्त कफ रक्त दोष कास स्वास छाती पीर पेट शूल प्रमेह मूत्र कृच्छ्र सोजा कफ विन्द कुबाद हाथ पांव की जरन हड़फूटन गुल्म होल दिल भ्रम वायु हुत की ये सर्व रोग नाशै भूख वढै ॥ इति सर्व रोग सुन्दर चूर्ण अथ योनि शूल निम्ब के वीज की गूदी रेंडी की गूदी नीम के गाभा के रस मे गोली कै भग मे राखै योनि की शूल मिटै अथ अनंग वर्द्धन रसः जायफल १ अफीम २५ गाय के घृत मे खरिल करै घड़ी १ वाद बड़ी कै गौर वा चिर ई पकरि कै दोपग उदर मल दूरि कै टिकरी पेट मे भरि डोरा से बन्द करै सो मुखी मे धरि बन्द कै गजपुट आंच देइ जब स्वांग सी तल होय तब ले रत्ती २ बंगला पान में दिन २१ प्रात सांझ को दूध पीवै ५॥ खीचारी खटाई तेल से परहेज करै दिन २१ तौ रति समय सी भोग तेन होय अन्य सिहोड की जड़ खाद कै छाया मे सुखै गदी कै पाताल यंत्र से तेल निकासै सो सीसी मे धरै खाय बुंद २ बंगला पान में दिन ३१ तो नपुंसक मर्दई पावै और मर्द खाय तो काम भोग मे तृप्त न होय संशय अनंग वर्द्धन कै सब तथा गुणाम अथ रस प्रकारः ताब की हरताल तोला १ कृष्णा तुलसी के रस मे खरिल करै पहर १२ गोली बांधै मासे २ छाया में सुखावै फेरि पियाज लाल में कोलिकै भरै गोली मुख बन्द कै कै कपरौटी करै पुट २ छाया में सुखावै फिर पीपर की चैली ले पक्का ५२ सेर गजपुट

आंचदेइ तब सिद्ध होय रत्ती तोला प्रमाण खाय की चाउरप्रमा ण अन्य तावकी हरताल तोला २ उत्तरन के दूधमें भिजवे फेर पीपर की छाल लै कोइला करै आधसेर ॥ उत्तरन के रसमें सानै घरिया बनावै २ तिहमें हरताल धरै दूसरी घरिया में बन्द कै एक छोटी मलिया में धरि मुख बन्द करि कपरौटी कै घामें सुखावै फेर बिनवा कंडा पक्का ॥ ३ गजपुट आंच देइ सिद्ध होय सो खाय चाउर भर पान में तो बल होय रोग जाय अन्य हरताल तोला २ घिउकुआर के रस में खरिल करै पहर १ टिकिया के संपुट में धरि कै सिद्ध होय खाय चाउर भरि बलपुष्ट कै रोग हरै अथ पारा की विधि पारा तोला १ लैनवां कपास के फूल के रस में खरिल करै वही के सोंटासे पहर १ घोटगोली बांधि छाही में सुखावे फेरि सपेद पियाज कोल कै भरै मुखबन्द कै कपरौटी कै सुखावे फेरि एक हांडी में बारू भरि कै भीतर पारा धरै मुखबन्द करै हांडी का गजपुट आंच देइ कंडा पक्का ॥ २ सेर तरे देइ ऊपर ॥ ३ सेर देइ बीच में हांडी धै आंच देइ सिद्ध होय खाय चाउ भरि अन्य तांबेकी करोरी तोला १ की बनवावै तिहमां पारा धरै तोला १ ऊपर कागदी निम्बू का रस डारि देइ भरि के डारत जाय जब ताईं करोरी पारा का पी न लेइ जब पारा करोरी में मिलै तो मट्टी के कासा २ में धरि बन्द कै घोड़े की लीद में गाडै दिन २१ फेरि निम्बू कोरै एक ईंट में गडवा कै पारा धरै और आंच देइ धीरै और पारा के ऊपर तिल के तेल का पुतारा देत जाय आंच पहर ४ तब सिद्ध होय खाय चाउर भरि पान में अन्य पुराने निम्बू की जड़ खोदि कै पहिले उसमें केला की खार भरै २५ फेरि पारा धरै तोला ५ फेरि खार धरै २५ फेरि बंद करै काठ से मट्टी से गाड़ा रखै मास ६ बाद निकासै पारा सिद्ध होय सो खाय चाउर प्रमाण पान में **अथ तांबा गलने की बिधि** निमोदा के दावन से गलै गोभी के रस से गलै **अथ रूपरस बिधि** चांदी तोला २ सोनामाखी मासा ४ कुकरौंधा से खरिल करि

चांदी पर लेपै फेरि धमरा का रस लेपै ऊपर तो गजपुट देइ आं-
च पहर १ तो रूपरस होय सो खाय चाउर प्रमाण सब रोग जाइ
अन्य कुंमुनी का रस तोला २ पारा तोला १ खरिल करै पहर १ फे-
रि संपुट में धरि कपरौटी करै ५ गजपुट आंच देइ पहर १ पारा सि-
द्ध होय अथ संखिया की विधि बथुवा के रस में संखिया
भिगोवै दिन २ फेरि बथुवा की लुबदी में धरि कपरौटी करै ५ फेरि
हांडी में बालू भरै बीच संखिया धरि के मोंहड़ा बन्द करै आंच देइ
पहर ३ तो भस्म होय सो खाय चाउर भरि अन्य बनदूधी रस में
भिगोवै दिन १ बालुका यंत्र से सिद्ध होय सो खाय चाउर भरि
इति संखिया की विधि ॥ अथ लोह मारन बिधिः लो-
हा कांती सार ५१ अग्नि में तप्त के बुझावै तेल में ७ गो के माठा
में ७ गो मूत्र में ७ कुरथी के पानी में ७ फेरि लोह चून कै कै बछे व
हा मगावै सो रस काढ़ि के भावना देइ तो आंच देइ पहर ४ यही
बिधि करै ३ फेरि घिउकुआर के रस में भावना दै खरिल करै आं-
च देइ पहर ४ यही तरह करै आंच ७ फेर मदार के दूध की भा-
वना दै खरिल करै फेरि टिकरी बनाय बनाय मदार के पाता पर
धरै आंच देइ पहर ४ यही बिधि ७ फेरि मदार के सोर के रस में
खरिल करै बरी बनाय कुरै कोशा के संपुट में धरि आंच देइ यही
बिधि ७ फेरि सेमर के मूसला के रस में खरिल करै आंच देइ ३
फेरि अकासबवरि के रस में खरिल करि आंच देइ ३ फेरि बंगला
पान के रस में खरिल करि आंच देइ ३ फेरि बटसोर के रस में खरि-
ल करै आंच देइ ७ फेरि मिर्च २५ पीसि जल में खरस के खरिल
करि आंच देइ १ यही बिधि बड़ी इलाइची तेजपात चीत की जड़
पाढ़ी के रस सोंठ लहसुन जायफर जावित्री सबन के खरस में
खरिल कै के एक एक आंच देइ फेरि गंधक आंवला सार १ पारा
दूनी खरिल करै पहर १ फेरि लोहा मेरै के खरिल करै पहर ४ फेरि
पर्ई में धरि दूसरी पर्ई से ॥ बन्द की कपरौटी करै अरि दह

सुखवै फिर आंच देइ पहर ४ फेरि सिंगरफ लेइ मिले के खरिल करै पहर ४ फेरि देव १ पहर ४ फेरि घिउकुआरी के रस में खरिल करै पहर २ आंच देइ पहर ४ येही विधि आंच २२ देइ तो लोहा सिद्ध होय बूका सिंगरफ के सम सो अनोपान यातें सबै रोग नाशै अमृत तुल्य होय इति लोह बिधि ॥ अथ सिंगरफ बनाने की बिधि हिरमिजी १ निशोदर १- पारा आधी छटांक फेरि बकुत औ आलि सुरुख हिरमिजी जल में खरिल करि छानि लेइ सो कोरी हांडी में भरि चूल्हे पर धरि आंच दै औटै निशोदर लिजाय पारा डारै जब गाढ़ होय तब उतारि लेइ हांडी ठंढी होय दिन २० तो ईंगुर होय अथ तांबा हरताल की बिधि हरताल तोला १ तांबा तोला ४ असगंध तोला ५ कोष्ठा में तांबा हरताल मेधरै ऊपर असगंध दे संपुट के कपरौटी कै गजपुट आंच देइ सिद्ध होय खाय चाउर भरि पान में बलपुष्ट भोग्य होय रोग सब नाशै इति तांबेश्वर ॥ हरताल असगंध सोना यही बिधि मारै तो बसंतमालिनी रस होय अन्य हरताल असगंध चांदी यही तरह मारै तो रूपरस बनै अथ गोदंती की बिधि गोदंती हरताल तोला ५ आक दुग्ध में भिगोवै दिन १ संपुट कै फूंके सिद्ध होय खाय चाउर भरि ॥ अन्य भांग औरहरदी तर ऊपर धरि के फूंके सिद्ध होय ॥ अन्य नकछिकनी के रस में भिगोवै दिन १ वोही की लुगदी में संपुट के फूंके तब सिद्ध होय इति गोदंती बिधि: ॥ अथ अबरक की बिधि अबरक ८। थो०। तर ऊपर भांग धरि के ढार में लपेट के फूंके सिद्ध होय ॥ सर्व रोगे पुरातन व्याप्तं दुलाई प्रमाणतः। रोगान घ्नंति सकलाव लीभोगी गजेन्द्र वत् १ सहस्र पुट के होय तो अमृत तुल्य होय अथ नाग केशर बिधि सीसा तोला ५ भांग में धरि के पीपर की छाली में फूंके सिद्ध होय अथ बंगेश्वर बिधि रांगा तोला ५ सै भांग संपुट में धरि बीच में रांगा धरि पीपर की सूखी छाल सें गज पुट

आंच देइ सिद्ध होय ॥ रांगा पत्र कै गोमूत्र में बुझावै ७ बेर फेर हरताल मदार के दुग्ध में पीसि पत्र में लेपै कोसा में संपुट कै गजपुट आंच देइ पहर २ फिर स्वांग सीतल निकारे सिद्ध होय ॥ इति नागकेशर बंगेश्वर विधिः ॥ अथ अन्य विधिः ॥ सिंधूत्थ विश्वा रुचिकाग्नि पथ्या हिंगूषणं टंकण गंधकं च तुल्यं समस्तं कुचिला कुलकं च तुल्यं स स्नेह दुग्धेन त निस्तु खं स्यात् संसेव्यमानं गुटिका विधेयं स्व प्रमाणं विनिहंति रोगान् हृत्कुक्षि पार्श्वोदरना भिशूलं मंदाग्नि ना ग्राहगुदां रान्वै सिग्रुरसेन गुटिका कार्या इति उदर रोग प्रसमनी गुटिका ॥ सीसा पत्र कै गोदुग्ध में बुझावै बार २ फेरि मैनसिल मदार के दुग्ध में पीसि पत्र में लेपै संपुट आंच देइ पहर २ सिद्ध होय अथ रक्तपित्त औषधि सतावर गुर्च रूसा मुंडी चरिआरी मूसली खैर अबरा बहेरा भारंगी पुहकरमूल ये सब दवा दस पैसा भर लै चूर्ण कै पानी बारह सेर में औटै जब डेढ़ सेर बाकी रहै तब मिलि कै छानि लेइ तेहि में मैनसिल कै मारा सार डारै टका १२ मिश्री टका १४ फेरि पाक की माफिक होय तो उतारि कै घिउ मधु ८ बंसलोचन १ सिलाजीत शुद्ध १ तज १ काकरासिंगी १ पीपर १ वायभिरंग १ सोंठ १ जीरा १ हरैं १ त्रिफला २५ धनिया २५ पत्रज २५ मिर्च २५ नागकेसर २५ सब चूर्ण कै डारै तो घृत पात्र में धरै सो खाय १२ तो रक्तपित्त कै खांसी छर्दि आठो मूल पांडुरोग मूत्र कृच्छ बहुमूत्र आध्मान प्लीहा एते रोग जांय ध्रुव मिदम् इति खंडखाद्य बले हो रक्तपित्तादौ अन्य रूसे का स्वरस १६ गोदुग्ध ६४ घी में पचावै चिरायता १२ कोरैआ १२ मोथा १२ जेठी मधु १२ लोचनवाला १२ चंदन १२ इंद्रायन १२ मोहा १२ तगर १२ सरिवन १२ खस १२ कमलगट्टा १२ बैमान १२ पद्माख १२ मनहरी १२ सब की पीठी कै पचावै सो घृत खाय २५ मिश्री मिलै कै तो रक्त

पित्तनरहै अन्य सौंफ कीजीरा की मैदा मिश्री मिलायखा-
य तो रक्तपित्त नरहै अथ नासारक्तआवै सेत दूबोअ
नार की कली पीसिके नाश लेइ लोहू बन्द होय अन्य कुसुम
हुआ अनार कली पीसि नाश लेइ अन्य शखमल्का १२ कि-
समिस १२ मिलै केखाय तो लोहू बन्द होय अथ खांसी
की दवा अफ़ीम की टिकरी १ कुचिला १ लौंग १ मिर्च १ जा-
यफर धतूर के बीज १ सबखरिल करैगो घृतमें पहर २ गोली
बांधै चनासूम सांझका खाय १ तो कैसिउ खांसी होयनरहै सत्य
अथ स्वरभेद चिकित्सा गरम जल घिउभात मिलैखाय
गुर मिलायके इतिवाते अथ जुलाब मिश्री नैनू खाय
२५ पथ्य दूध भात खाय इति वाते त्रिकुट का चूर्ण६ मधु मिलै
खाय इतिकफे अन्य गजपिपरी पीपर पिपरामूर सोंठ स-
मलै चूर्ण कै ६ गोमूत्रमें पीवै दिन७ अन्य त्रिफला त्रिकुट
चूर्णकै खावाकरै अन्य अजमोदा हरदी चीत जवासा अव
रा सम चूर्णकै घृत मधुमे खाय ३६ अन्य हर्रा सोंठ पीपर स-
म चूर्णकै खाय ६ तो सुरभेद मिटै अन्य अगर देवदारु दारुह
रदी समलै काढ़ा कै पीवै सुरभेद मिटै अन्य गोदुग्ध मिश्री १
पीवै सुरभेद मिटै अथ गोरक्ष वटी स्वरभेदासौ पारा शुद्ध
१२ तांवा भस्म १२ लोहभस्म १२ भटकटैया के रस ते खरिलकरै
बार ७ फेरि बटी बनावै मूंगप्रमाण सोखायरोज १ तो स्वरभेद
मिटै इति अथ गोस्तन सीतला बिधि: गौके स्तन मे
एक तरह का छाला होता है वोही छाले का पानी नश्तर की नो-
क पर धर के आदमी के बांह पर चमड़े के भीतर पहुंचावै तो एक
फफोला दूरि में पड़ता है दिन ३ के बाद सो नवें या दशवें दिन अ
च्छा होता है फिर वा मनुष्य के कबहूं सीतला नाहीं निकरत है
ऊमिर भर निर्भय रहत है पुनः विधि गोस्तन सीतला के छा
ला का एक नोकी लेनश्तर से छील के पानी निकालै सो पानी

आदमी के बांह पर सफाई से चमड़ा छील के उठावे जिहमा पानी निकरै तब चमड़ा के भीतर गोस्तन सीतला का पानी नस्तर के नोक से लगावै फेरि पटी औषधि वा परहेज का काम नहीं है और टीका देने के बाद दिन ३ के एक छोटी फुनसी उठती है छठवें सातवें छाला हो ता है अठयें दिन तक बैठ के पूर होत है फेरि गिर्द लाली किंचित सूजन होत है फेरि वह छाले का पानी निर्मल होत है सो उ पानी टीका देवे योग्य है गोस्तन के माफिक और नवयें दसवें रोज तक काहू काहू के थोरी तप होत है छेरी नीकू होत है दर समेत चौदह ते बीस दिन में दाग निशानी रहत है और टीका लेन के समय जन्मतो दिन २२ बाद जब चाहत करदेइ यह टीका ते सीतला नाहीं निकरत है ध्रुव मिति अथ अति

प्रभूत रसः पारा तोला १ बिष १ हरताल १ आंवलासार गंधक १ त्रिकटु ३ त्रिफला ३ सोहागा १ जमालगोटा गो दुग्ध में मेंचुरै के १ लौंग १ मधु १ जवाखार १ ॥ बिधि ॥ पहिले पारा हरताल खरिल करै दूजे गंधक बिष मिलावना तीजे सोहागा मधु मिलावै चौथे त्रिकुटु मिलावै फेरि सर्वौषधि मिलाय भंगरा के रस ते खरिल करै पहर ६ तब सिद्ध होय गोली करै रत्ती प्रमाण की पान संग गोली खाय १ तो पुष्ट होय २ अदरक सों धातु थंभे २ छाछी सों हडवालु मिटै ३ गोघृत सों ज्वर मिटै ४ छेरी के दुग्ध सों निनाव मिटै ५ जवाइन सों पथरी जाय ६ बबुर के फल सों फिरंगबाद मिटै ७ नींबी के रस सों सुखकार होय मलज्वर जाय ८ गूमा के रस सों बिषमज्वर मिटै ९ नीबी के रस सों अठारह कुष्ट जाय १० पथ्य [illegible] रोटा अलोनी दिन २१ अवराखांड सों धा[illegible] नहा २१ रेटा सु पानी सों दीजे चिनगी पर[illegible] मिटै १२ आरसी तेल में मिलै गरम करि मर्दन करै सबशूल मिटै १३ धतूरे के रस से मरदन करै कमर पीर जाय १४ और पसुरिया बाई जाय १५ और अर्द्धंग बाई जाय १६

और गठिया बाई जाय २७ और सर्व बाई जाय २८ कटहरी के रस सों खाय तो दमा जाय २९ रामचकरीया की बुकरी २५ सों दीजे तो सर्व बाई जाय २० गोमूत्र २५ सों छूई जाय २१ और कंठोदर मिटै २२ निम्बू के रस सों भूख बढ़ै २३ और पित्त जाय २४ नेत्रांजन करै तो जल भला होय २५ अरनी के पत्र के रस सों सन्निपात जाय २६ और सितंग जाय २७ और सुन्न बहिरी जाय २८ और अंतरजरी जाय २९ और सरदी गरमी जाय ३० छेरी के मूत्र सों तापतिल्ली जाय ३१ और गले का फीहा जाय ३२ और उदर को बात कमजाय ३३ और उदर की सर्व ब्याधि जाय ३४ छोटी इलाइची चीनि आ कपूर सों दीजे तो मुख की सुगंध मिटै ३५ लौंग सों अजीर्ण मिटै ३६ ॥ इति अग्नि प्रभूत रसः ॥ गोक्षुरक क्षुरकः सतमूली वानरि वी जवलाति वलानां चूर्ण मिदं पय सानि शि पीतं यस्य गृहे प्रमदा शतमस्ति अथ कुष्ठादि यामा रोगे तैलम् कनकभुजगवली मालती पत्र दूर्वा मनसिल रस गंधं मर्दयेत्तैलमेतत् हरति सकलकुष्ठं दुष्ट पामा विचर्चीहरति चर्म रंध्रं स्याम लं त्वं त्वचायाः अग्रहिणयां अफीम १२ कत्था पापरी २५ गुड १ बूटी बना सम खाय १ बंद होय के होय तब अन्य अंगाहड १२२ सोंठ १२ सौंफ १२१ आम की कुशाली १२ सब की सम चिरी खाय १२ बन्द होय सत्य ॥ जगज्जगन्यंघ्रि युगं हरि स्मरन् रसांकनागेंदु सितातनावजे सराधया कृष्णदत्तीह मासि तत्सुबोध ना..... कार संग्रहम १ मुनी श्वरै श्वार्कपुरस्सरै कृताद नेक शास्त्राद्बहु सुज्ञ..... महौषधीनां हि मरांस मुहत्तानि राजत संग्रह कल्प बल्ली २

इति श्री मद्द्विवेदि वंशाद्भव राधे कृष्ण पण्डित विरचिता औषधि संग्रह कल्प बल्ली भाषा संवत् १९३२ ॥